नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivahan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 382, नई दिल्ली, रविवार 22 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 चेन्नई के सेल्वन आर. युगेश कुमार ने GATE 2026 में किया देश में टॉप....
06 बच्चों के अधिकारों से संबंधित कानूनी मुद्दे
08 झारखंड की राजधानी रांची समेत राज्य के विभिन्न भागों में मना सरहुल पर्व

परिवहन विशेष — देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र | India's First Leading English Transport Newspaper — parivahanvishesh | NEWS NTV TRANSPORT VISHESH www.newstransportvishesh.com

परिवहन विशेष, (द्विभाषी हिंदी और अंग्रेजी दैनिक समाचार पत्र), भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा अनुमोदित समाचार पत्र द्वारा आपको

सौहार्दपूर्ण निमंत्रण

परिवहन विशेष, पत्रकारिता में उत्कृष्टता, जन जागरूकता और राष्ट्रीय विकास के लिए समर्पित एक विशिष्ट मंच।

अपने तीसरे वार्षिक सम्मान समारोह दिनांक: 29 मार्च 2026, समय: दोपहर 1:00 बजे से शाम 6:00 बजे तक, स्थान: मावलंकर हॉल, कॉन्स्टिट्यूशनल क्लब ऑफ इंडिया, नई दिल्ली में अत्यंत गर्व और अपार प्रसन्नता के साथ आपको हार्दिक और सम्मानपूर्वक आमंत्रित करते हैं, आप हमारे कार्यक्रम में शामिल हों।

इस कार्यक्रम में देशभर के प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों, विचारकों, नीति निर्माताओं और प्रमुख हस्तियों की गरिमामय उपस्थिति देखने को मिलेगी।

इस महत्वपूर्ण उपलब्धि का जश्न मनाने और भारत देश में उठे अति ज्वलनशील मुद्दों के हल के प्रति विचार जानने, सुनने और बताने में आपकी उपस्थिति हमारे लिए सम्मान की बात होगी।

ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज द्वारा रजिस्ट्रार ऑफ न्यूजपेपर्स फॉर इंडिया द्वारा मान्यता प्राप्त दो भाषाओं में संचालित (हिन्दी एवम् इंग्लिश) "परिवहन विशेष" दैनिक समाचार पत्र के तृतीय सालाना सम्मान समारोह दिनांक 29 मार्च (रविवार), समय 1 बजे से 6 बजे स्थान मावलंकर ऑडिटोरियम कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया में आप सभी आमंत्रित हैं।

इस वर्ष का वार्षिक सम्मान समारोह भारत देश के ज्वलंतशील मुद्दों पर आधारित है और उसके हल के प्रति समर्पित है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति करने के प्रति परिवहन विशेष के प्रबंधक मंडल द्वारा भारत देश के अति विशिष्ट एवम् विशेषज्ञों की राय प्रस्तुत करने हेतु भारत देश की अति विशिष्ट एवम् भारत देश के प्रथम नागरिक के लिए गर्वनीत सर्वोच्च पद पर आसीन एवम् सेवा निवृत राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृह मंत्री एवम् सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश कार्यरत एवम् सेवानिवृत्त को ईमेल द्वारा अनुरोध कर उपस्थित होकर अपने विचार रखने का अनुरोध किया है।

कैबिनेट स्तर भारत सरकार के मंत्रियों, दिल्ली परिवहन आयुक्त, दिल्ली पुलिस आयुक्त एवम् अन्य प्रमुख गणमान्य व्यक्तियों से मुलाकात कर इस समारोह में सम्मिलित होकर जनहित में अपने विचार प्रकट करने का अनुरोध किया है।

इस समारोह मे ऊपरलिखित अति विशिष्ट गणमान्यों के अतिरिक्त कई राज्यों के उच्च न्यायालय से सेवा निवृत न्यायाधीश, जिला न्यायालय के पदासिन न्यायाधीश के साथ उच्च स्तरीय सरकारी पदों पर कार्यरत/ सेवानिवृत्त अधिकारी, राजनयिक एवम् राजनीतिज्ञ के साथ साथ अधिवक्ता, समाज कल्याण संस्थाओं के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपस्थित रहकर अपने विचार प्रकट करेंगे।

इस सम्मान समारोह के सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आपका मन मोह लेंगे।

आपकी जानकारी हेतु इस सम्मान समारोह में उपस्थित होने वाले कुछ विशिष्ट गणमान्यों, विशेषज्ञों और समाज सेवा में समर्पित नाम प्रस्तुत कर रहे हैं।

अगर आप भी भारत देश को प्रदूषण मुक्त, दुर्घटना एवं जाम मुक्त, साइबर क्राइम मुक्त और महिला सुरक्षा के प्रति जिम्मेदार नागरिक है और इन मुद्दों को भारत देश से जड़ से खत्म होने पर सहमति रखते है तब परिवहन विशेष समाचार पत्र का 29 मार्च रविवार को संपन्न होने वाला यह तीसरा सालाना सम्मान समारोह आपके लिए भी अति विशेष है और आपकी उपस्थिति हमारे लिए।

इस सालाना सम्मान समारोह को अति विशेष कार्यक्रम बनाने के लिए परिवहन विशेष प्रबंधक मंडल के लिए सहयोग में कंधे से कंधा मिलाकर प्रयासरत है, टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत, दिल्ली प्रदेश बंगाली प्रकोष्ठ की पिंकी कुंडू, रक्षा द सेवियर संस्था की अध्यक्ष इंदु राजपूत, सर्व धर्म मित्र मंडल के अध्यक्ष केके छाबड़ा, राजपूत समाज के लिए समर्पित जनसेवक सोबरन सिंह राजपूत, आर के राजपूत, अधिवक्ता संगीता मल्होत्रा तलवार, अधिवक्ता विकासदीप शर्मा एवं अभिषेक राजपूत। परिवहन विशेष प्रबंधक मंडल इनके सहयोग के प्रति आभार प्रकट करती है।

29 मार्च 2026 को परिवहन विशेष समाचार पत्र के तृतीय सालाना सम्मान समारोह में सम्मिलित होकर जनहित में अपने विचार प्रकट करने के लिए उपस्थित होने वाले अति विशिष्ट, विशिष्ट एवम् विशेषज्ञों के विचार जानने के लिए आप सभी आमंत्रित हैं।

इस सम्मान समारोह में "परिवहन विशेष" के प्रबंधक मंडल द्वारा भारत देश के ज्वलंतशील मुद्दों के हल के प्रति विचार प्रकट करने हेतु विशेष रूप से निवेदन पर निम्नलिखित अति आदरणीय की उपस्थिति

कार्यक्रम में अपने मूल्यवान विचार व्यक्त करने हेतु उपस्थित होने वाले अतिथियों की पुष्टि सूची

"From Medical field"

* Dr. Anirban Hom Choudhuri Director Professor & HOD (Critical Care) VMCC & Safdarjung Hospital New Delhi
* Dr. C.B. Tripathi HOD, Department of Biostatistics, institute of Human Behavior and Allied Science (IHBAS)
* Dr. Rachna Agarwal Professor & HOD Department of Neurochemistry, Institute of Human Behaviour and Allied Science (IHBAS)
* Dr. Uday Kumar Sinha Professor, Department of Clinical Psychology, institute of Human Behavior and Allied Science (IHBAS)
* Dr. Sanjay Kumar Rai Professor Center for Community Medicine (AIIMS)
* Anil Kumar Singh, Asstt CMO IPGCL
* Dr R K Chaubey Ji, CMO NFSG Department of Forensic Medicine and Toxicology, Deen Dayal Upadhyay Hospital

****

"Bureaucrats and Govt official"

* Doctor banvari lal ex Chief principal income tax comissioner New delhi
* Chander Mohan R, IAS (Retd)
* Dr.M.Ravi Kanth, IAS (Retd)
* VIRENDER SINGH KALSHAIN, Ex-IRS, Deputy Commissioner, CBIC (GST & CUSTOMS) Ministry of Finance, New Delhi
* Ashish Ujlayan IRTS, Joint Director Business Development Railway Board Ministry of Railways
* Dr.R.K.Bhatnagar, Former Commissioner, IAS Retd. MEERUT
* Dr. Shourjo chatterjee. IA & AS (Retd), Ex Accountant General, Jammu & Kashmir
* Shri Ranjeet Singh IAS Secretary Vidhansabha Delhi
* Brig Gautam Segan SC SM (Retd), SHAURYA CHAKRA SENA MEDAL.
* Dr. Chitralekha Sharma Director Home Ministry Government of India.
* Mr. Nitin Pramod IFS , Director in the Ministry of External Affairs, Delhi
* Suresh Sharma Finance officer, Home ministry
* Mr. Alok kumar Chief General Manager(LPG), Retired, Indian Oil Corporation(Marketing Division), Delhi
* Mr. Ved Prakash ASP, Tihar jail, Honoured two times with Presidential Award Two times (2010, 2021)
* Dr. Dharampal Bhardwaj Chief Fire Brigade (President Awardee)
* Er. Narinder malik, General secretary All India Engineering Association
* . Ashok Kumar, Principal Private Secretary, Prasar Bharati
* Sh Ashok Sexena, Protocol Officer, Ministry of Health
* Bhupinder Singh DANICS
* Sandeep kumar dey Assistant chemist, Delhi Jal Board
* Mrs. Rashtriya jyoti Lab technician, Delhi jal board
* Rajpal Dahiya, Ministry of External Affairs, ASO, Retired, Assistant Section Officer
* Anju randhava, Joint Director
* Mrs. MANJU S KALSHAIN, DANICS (Adhoc), ADMN. OFFICER, Higher Education Department , Government of NCT of Delhi
* SURESH KUMAR SINGH, SANSKAR BHARTI HIMACHAL PRADESH, Now DELHI Sanskar Bharti PRASHAR Parchar Pramukh
* Sh Rahul Gupta, Assistant Engineer CPWD
* Pooran Singh, Superintending Engineer , Ministry of Road Transport and Highways.
* Amrendra Gupta Sr Correspondent (Political), DD News, Delhi

" Legal"

* Justice Rajesh Tandon Former judge, Uttarakhand High Court
* Presiding judge, Daily Lok Adalat Nainital High Court UK
* Sh. Dr. K. Venkaresan former civil judge, Tamilnadu Judiciary Chennai
* Dr Adish C Aggarwala President, International Council of Jurists, London
* Ex President, Supreme Court Bar Association
* Dr. Zeeshan Anjum (Life Panel Member SCBA & BAI) Hon'ble Supreme Court of India.
* Sandhya bajaj Advocate Supreme court former Chairman Haryana Handloom Apex former member National Commission for protection of Child Rights A great Social Reform er doing Free legal Advice Working for Children rights
* Mithelesh Panday, National Vice President RPI, Adv Supreme Court of India.
* Sangita Malhotra Talwar Senior panel Counsel Central Government
* Mr. Vikas Jain Advocate & Solicitors Supreme Court of India
* Mr. Abhishek panwar Advocate Supreme Court of India
* Dr. A.P. Singh Renowned Advocate, Supreme Court
* Renu Bhatt Dubey, ADV Supreme Court of India
* Shehla Chaudhary Advocate, Supreme Court
* Laxmi Narain Rao Retired Deputy Commissioner of Police, Advocate Delhi High Court
* Rajiv Chatterjee, Advocate High Court, Advocate Secretary, Association of Voluntary Agencies for Rural Development Social crusader
* Mohit Malik Advocate High court
* K K Mannan, Senior Advocate and former chairman bar council of Delhi
* Vikasdeep Sharma Advocate Supreme Court of India
* D K Sharma, President DBA Tees Hazari court Delhi
* Avnish Rana, President Dwarka District Court Bar Association Delhi
* Dinesh Kumar Mudgil Ex-President Dwarka District Court Bar Association Delhi
* Rajeshwar Dagar, Former Hony. Secretory Dwarka Court Bar Association Delhi
* Naveen Parashar, District Judge, Secretary Law & Legislative Affairs Department, Government of Madhya Pradesh New Delhi
* Ravinder Kumar pahuja Spl. Judicial Magistrate first class, High Court of Delhi
* Suresh Kumar Gupta, Former District Judge Rohini court Delhi, P.O District Consumer Forum Dwarka Delhi
* Deepak Jagotra, Former District Judge, Karkardooma court Delhi, P.O MCD House Tax Appellant Tribunal Delhi
* Surya Prakash Khatri, MLA Timarpur assembly and former Chairman Bar Council of Delhi
* Sudhir Sharma, Advocate, Vice President, Vishwa Hindu Parishad, Noida Metropolitan, General Secretary, Anti-Corruption of India, Uttar Pradesh, National General Secretary, All India Hindu Seva Dal, National Vice President, Bharatiya Shramik Kamgar Maha Sangh, a Bharatiya Janata Party (BJP) affiliate, Member of the Quality Council of India, Ministry of Commerce and Industry, Government of India, Director of Environment, Forest and Climate Change Promotion Council Unit, Nature Welfare Council
* Advocate Poonam Singh, National President of Bhagwan Dattatreya Dham and Women Power and Unity, Vice President of the West District Temple Cell, BJP

PLEASE TURN OVER

RNI No. RNI No :- DELHIN/2023/86499
परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र
India's First Leading English Transport Newspaper
parivahanvishesh
NEWS NTV TRANSPORT VISHESH
www.newstransportvishesh.com

परिवहन विशेष, (द्विभाषी हिंदी और अंग्रेजी दैनिक समाचार पत्र), भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा अनुमोदित समाचार पत्र द्वारा आपको

सौहार्दपूर्ण निमंत्रण

कार्यक्रम में अपने मूल्यवान विचार व्यक्त करने हेतु उपस्थित होने वाले अतिथियों की पुष्टि सूची

"Social"

* Shri Parvinder Singh Ambassador World Peace Institute United Nation
* * Dr Ramesh Mishra PHD, Gold Medalist by president in music, Retd Principal
* Pankaj Nanda National President, Mahadev Sena
* Shri Suresh Sharma founder and National President Jai Hind Manch
4. Sanjay Sharma, National President, Sanatani Hindu Bhagwa Sena
* Chairman My Gym Daak Kaawad Fouj
* Mr. Vijay Pore, chairman, Public Devasthan Trust Federation, Maharashtra State (Head Office, Satara)
* Dr. Manoj kumar (Mannu Tomar), President,
* Bhartiya Namo Sangh
* NGO & Sociyal Activist Association (Bharat)
* Sakriya bharat
* Sushri Rochika Aggarwal Vishwa Sanatan Hindu Sangh President
* Dr Raj Kumar Yadav National President, "UFTTSA" National United Front (Truck Transport Sarathi)
* Jathedar Dr. Avtar Singh Former Mayor North Delhi
* Mr. Jagjeet Singh Goldy Delhi prant sanyojak Bajrang dal
* Smt. Khulna Laimayum women's cell In Charge North east women cell
* Yamuna prasad Uttam jilla Sanghathan mantri Vishwa Hindu Parishad
* Meenakshi Gupta Uttam District Vice President Vishwa Hindu Parishad, Former jilla mantri Seva Bharti, Founder Samarth Blind Welfare Foundation Collaborate with Blind Person Association
* Anil Kumar Verma, President, Blind Persons Organization
* Chanderpal Bairwa, Disst. President, Mehrauli, SC Cell, Bhajpa, Editor, Delhi aur Delhi
* Meenu Jain, Sah baudhik Pramukh, Rashtra Sevika Samiti, Dilli Prant
* * Ravi Sharma, National General Secretary – Amit Shah Youth Brigade, Director – Climate and Weather Board – Uttar Pradesh, Nature Welfare Council, Member – Quality Council of India, State Secretary – Uttar Pradesh, Bhartiya Shramik Kamgar Karmachari Mahasangh
* Deepak Dhar, President Jai Shree Ram Seva Dal
* Divya Sharma, District President, Mahila Congress, Director, Uttar Pradesh Plantation Board & Nature Welfare Council, Mrs. India Attitude Crown (20/02/2020), Former Women's Wing President, All India 'Aapki Awaaz' Social Organization (2023)
* Udayan kulshreshtha, Central vice chairman in nature welfare council, Central secretary in anant sewa sansthanam, Central vice chairman in nar narayan sewa trust, Founder and chairman vivache international, Central chairman club vivache
* Indu Rajput Chairman Raksha The Saviour
* Safiena Joseph, President Nari Shakti
* Pinki Kundu, Temple of Liberalization and Welfare Allied Trust
* Aapda Mitr, West Zone Delhi
* Civil Defence, West Zone Delhi
* Pradeep sharma, Aam admi party Former Mcd elected councillor Former district president And General Secretery delhi congress

"Educator"

* Shrimad Jagatguru Shri Brahmamadhav Goreshwaracharya Brajrasik Ji Maharaj Central Chief Patron, Sanatan Dharma Pratinidhi Sabha
* Member, Central Guidance Council, Vishwa Hindu Parishad
* Dr. Acharya Manoj Nayyar National President Jyotish Mahasangh
* Dr. N Pujaprasun Professor Numerology Gold medalist
* SH Hetram, Ji, Jyotishacharya
* Parull Bhatnaggar, Astro-Numero-Vastu Expert, Indirapuram, Ghaziabad
* Ajay Rathi, Senior Athletics coach Haryana govt Sports department
* Dr. Ranbir Singh Laishram International Gold medalist in Martial Arts
* Rupkishore Rajput Manager, Aman Computer Systems, Kalkaji, New Delhi
* Arunanda (YAG GURU), Palwal Haryana
* Mahant Yogi Rohtash Nath
* Bramchari Kamleshwarand Maharaj

"Experts"

* PROF. DR. R.S. NEHRA, Academician. Entrepreneur National Security Educator Visionary Scholar. Strategist
* Yoginder Dagar, DGM (Cyclist)
* Maharaj singh Expert motor vehicle Act and rules
* Dr Veerendra Singh Rathore Deputy Transport Commissioner (Road Safety) Transport and Road Safety Department, Govt of Rajasthan
* Mukesh Dayal ex DTO Delhi Transport Department
* Mr. AJOY SHAH FOUNDER CEO VEDD CONSULTANT - TRAINER COACH & MENTOR , FIELDS OF SALES & MARKETING , COMMUNICATION , TYRE CARE & SAFETY
* Pilot Anil Sharma

इस कार्यक्रम में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे

1. Nancy Bathla Singh, Ganesh Vandana
2. Dr Rama Shankar Mishra, Solo song performance
3. Swastika mishra, Solo song performance
4. Jainit mishra, Solo song performance
5. kiran Mishra, Solo song performance
6. Dr. Ranbir Singh Laishram Martial Arts
7. Sangeeta Dastidar Kathak Dancer (Freelancer soloist), Saraswati vandana
8. Sapna prajapati Durgavahini Shastra vidhya
9. Drishti choudhary Kathak dance
10. Mansi Sharma, Vande Mataram
11. Vaibhika Manna, National Anthem

इस कार्यक्रम में जनहित जनकल्याण में कार्यरत निम्नलिखित एनजीओ को उनके कार्यों के प्रति सम्मानित किया जाएगा

1. Vikas Kumar Rai, Vaishnavi social work foundation, 8750322043
2. K.K Chhabra, Transporters Representative welfare Association Regd, 9910234578
3. Sefina Joseph , President of Narri Shakti Woman Welfare charitable trust 7625098270
4. Dharmendra Gullaiya Patron , Shri Dharmik sewa sangathan, 9999950556
5. Neelima barna Nideshak Swatantrata senani VP Singh Sansthan nideshak udaipur rajasthan, 9079903004
6. Dr. Sushma Vashisth, SANKALP CHARITABLE TRUST, 7011670379
7. Jitender ahlawat , Treasurer The mellow foundation, 99999 50556
8. Ashima NGO SarvaPrana Suddhi Association, Indian Specialised Counselling Academy, 9582492531
9. Vikasdeep sharma, Sarvjan kalyan trust , 9911994525
10. Yashu Agrawal, Team we care trust, 8285378158

इसके अतिरिक्त साहित्य जगत में समर्पित साहित्यकारों को सम्मानित किया जाएगा

1. Santosh Kumar sharma -
2. Dr Varsha Singh -

इसके अतिरिक्त अन्य कुछ व्यक्तियों को उनके द्वारा किए जा रहे समाज सेवा के प्रति सम्मानित किया जाएगा।

1. Jai khurana -7291017156 (yoga instructor)
2. Jagdish Chand- 9899190633 (hospital)

इस कार्यक्रम में समाज सेवा में समर्पित समाजसेवको को भी उनके द्वारा किए जा रहे समाज सेवा के कार्यों तथा समाज सेवा के समर्पण के प्रति सम्मान प्रदान किया जाएगा।

1. Santosh kumar chaturvedi -8539917550
2. Vaibhav Kaushik- 9899444253
3. Sandeep batra-9813072976
4. Raj kumari devi- 9810950415
5. Chhaya Singh-9289406039
6. Nidhi Sharma-9355109409
7. Virender Kumar Chaturvedi- 7982436532
8. Hemraj Gurjar-9560088812
9. Swatantar Singh Bhallar- 9811332377
10. Neetu yadav-9990866976
11. Jitender-9310127688
12. Usha Thakur-9971346847
13. Roshan-9319486072
14. Mrs Indu Sharma- 9899408386
15. Ramesh Kumar Mishra- 9911746070
16. kiran kumari Mishra- 9990210806
17. Raunak Raj-9931824663
18. Deep mala-6396815202
19. Amrit Kalra , 9650170032

तीसरा वार्षिक
सम्मान समारोह
2026

TRANSPORT VISHESH NEWS LIMITED
www.newsparivahan.com, www.newstransport.in

नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 382, नई दिल्ली, रविवार 22 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 चेन्नई के सेल्वन आर. युगेश कुमार ने GATE 2026 में किया देश में टॉप....
06 बच्चों के अधिकारों से संबंधित कानूनी मुद्दे
08 झारखंड की राजधानी रांची समेत राज्य के विभिन्न भागों में मना सरहुल पर्व

चेन्नई के सेल्वन आर. युगेश कुमार ने GATE 2026 में किया देश में टॉप

कड़ी मेहनत, लगन और अनुशासन से रचा इतिहास, परिवार और शिक्षकों में खुशी की लहर

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। देश की प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा GATE 2026 में चेन्नई के होनहार छात्र सेल्वन आर. युगेश कुमार ने एयरोस्पेस इंजीनियरिंग शाखा में ऑल इंडिया रैंक–1 प्राप्त कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। इस उल्लेखनीय उपलब्धि के साथ उन्होंने न केवल अपने परिवार बल्कि पूरे चेन्नई और देश का नाम गौरवान्वित किया है।

युगेश कुमार की इस ऐतिहासिक सफलता से उनके परिवार, मित्रों और शिक्षकों में हर्ष का माहौल है। बताया जाता है कि उन्होंने निरंतर परिश्रम, दृढ़ संकल्प और अनुशासित अध्ययन के बल पर यह मुकाम हासिल किया है। उनकी इस उपलब्धि को देशभर के छात्रों के लिए प्रेरणादायक माना जा रहा है।

युगेश कुमार के पिता एम. रामकृष्णन चेन्नई के प्रसिद्ध विवेकानंद कॉलेज में गणित के प्रोफेसर हैं। पिता की शैक्षणिक पृष्ठभूमि और मार्गदर्शन ने भी युगेश को पढ़ाई के प्रति प्रेरित किया। परिवार का कहना है कि बचपन से ही युगेश पढ़ाई के प्रति गंभीर और जिज्ञासु रहे हैं, जिसके कारण उन्होंने यह असाधारण उपलब्धि हासिल की।

शिक्षाविदों का मानना है कि GATE जैसी कठिन और प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षा में देशभर के लाखों अभ्यर्थियों के बीच प्रथम स्थान प्राप्त करना अत्यंत गर्व की बात है। युगेश कुमार की इस उपलब्धि से आने वाले समय में इंजीनियरिंग और वैज्ञानिक क्षेत्र में नए आयाम स्थापित होने की उम्मीद जताई जा रही है।

युगेश कुमार की इस शानदार सफलता पर शिक्षकों, विद्यार्थियों, समाज के प्रबुद्ध लोगों और शुभचिंतकों ने उन्हें बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। उनकी यह उपलब्धि देश के युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गई है।

हेलमेट नहीं पहनने वालों के 4 दिन में काटे 17,415 चालान; दिल्ली पुलिस के एक्शन से मचा हड़कंप

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने 16 से 20 मार्च तक दोपहिया वाहन चालकों के लिए विशेष हेलमेट अभियान चलाया। इस दौरान 17,415 चालान काटे गए और चालान किए गए लोगों को हेलमेट भी दिए गए। संयुक्त पुलिस आयुक्त संजय कुमार त्यागी ने हेलमेट को जीवन रक्षक कवच बताया।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली की सड़कों को सुरक्षित बनाने और दोपहिया वाहन चालकों को जीवन के महत्व का अहसास कराने के लिए दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने 16 से 20 मार्च तक विशेष अभियान चलाया। 17415 वाहन चालकों के चालान काटे गए।

अभियान का समापन बाबा खड़क सिंह मार्ग स्थित ट्रैफिक ट्रेनिंग पार्क में हुआ। इस दौरान पुलिस ने जिन लोगों के चालान काटे उन्हें हेलमेट भी दिया गया।

नियमों का पालन करने की दिलाई शपथ

संयुक्त पुलिस आयुक्त संजय कुमार त्यागी ने हेलमेट को केवल कानूनी आवश्यकता नहीं, बल्कि जीवन रक्षक कवच बताया। एडिशनल पुलिस कमिश्नर विजयंता आर्या, दिनेश कुमार गुप्ता, डीसीपी शोभित डी.सक्सेना और एसीपी सुनील चौहान ने युवाओं को सड़क नियमों का पालन करने की शपथ दिलाई।

अभियान केवल चालान काटने तक नहीं था सीमित

गुप्ता ने बताया कि यह अभियान केवल चालान काटने तक सीमित नहीं था, बल्कि मानवीय संवेदनाओं को भी छूने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम में उन लोगों के वीडियो साक्षात्कार साझा किए गए, जो हेलमेट की वजह से दुर्घटनाओं में बच गए।

राम मनोहर लोहिया अस्पताल के निदेशक और दिल्ली मेडिकल एसोसिएशन के विशेषज्ञों ने बताया कि सिर की छोटी सी चोट भी गंभीर परिणाम ला सकती हैं।

दिल्ली से पटना के लिए जल्द चलेंगी डीटीसी की एसी बसें, 17 अंतरराज्यीय रूटों पर सेवा शुरू करने की योजना

दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) जल्द ही दिल्ली से पटना के लिए बस सेवा शुरू करेगा। यह दिल्ली सरकार की लंबी दूरी की अंतरराज्यीय सेवा है, जिसका उद्देश्य त्योहारों के दौरान यात्रियों को ट्रेनों की भीड़ से राहत दिलाना है।

नई दिल्ली। दिल्ली से पटना के लिए जल्द दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) की बसें चलेंगी। लंबी दूरी के किसी अंतरराज्यीय रूट पर दिल्ली सरकार लंबे समय बाद यह सेवा शुरू करने जा रही है।

कुछ समय पहले बिहार के परिवहन मंत्री ने इस संबंध में दिल्ली सरकार को पत्र लिखा था। बिहार के साथ अन्य राज्यों के लिए भी बस सेवा शुरू करने की सरकार की योजना है। इसके लिए सीएनजी या बीएस-6 मानक वाली डीजल बसें किराये पर लेने पर सरकार विचार कर रही है।

राजधानी में रहने वाले पूर्वांचल के लोगों के लिए यह खबर खास महत्व रखती है। बिहार तक बस सेवा शुरू करने के लिए जल्द ही दोनों राज्यों के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए जाएंगे। इससे खासकर छठ, दिवाली और अन्य त्योहारों के समय ट्रेनों में होने वाली भारी भीड़ से यात्रियों को राहत मिल सकेगी।

17 अंतरराज्यीय रूटों पर चलेंगी 50 नई बसें

परिवहन मंत्री डॉ. पंकज सिंह ने बताया कि डीटीसी की 17 अंतरराज्यीय रूटों पर 50 नई पर्यावरण-अनुकूल एसी बसें शुरू करने की योजना है। इसकी शुरुआत पटना रूट से होगी।

12 मीटर लंबी आधुनिक बसें न केवल प्रदूषण कम करने में मददगार होंगी, बल्कि यात्रियों को आरामदायक और किफायती सफर का अनुभव भी देंगी। सरकार का उद्देश्य दिल्ली और पड़ोसी राज्यों के बीच कनेक्टिविटी को मजबूत करना है।

धार्मिक स्थलों के लिए भी चलेंगी विशेष बसें

दिल्ली सरकार ने हरियाणा और उत्तर प्रदेश के कई शहरों के लिए भी बस सेवाओं का विस्तार किया है। इसी कड़ी में सरकार केवल व्यावसायिक रूटों तक ही सीमित नहीं रहेगी, बल्कि धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए भी विशेष बस सेवाएं शुरू करने जा रही है। नई योजना के तहत दिल्ली से वैष्णो देवी (कटरा), खाटू श्याम और अयोध्या जैसे प्रमुख धार्मिक स्थलों के लिए भी बसें चलाई जाएंगी।

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर जल्द शुरू होगा QR कोड से एंट्री का सिस्टम, AI कैमरों से होगी कोने-कोने की निगरानी

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की सुरक्षित एंट्री और भीड़ प्रबंधन के लिए जल्द ही QR कोड आधारित सिस्टम शुरू होगा। इसके साथ ही AI आधारित निगरानी प्रणाली भी लागू की जाएगी, जो संदिग्ध गतिविधियों पर तुरंत अलर्ट देगी।

नई दिल्ली। देश के सबसे व्यस्त रेलवे स्टेशनों में शामिल नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की एंट्री को अधिक सुरक्षित और व्यवस्थित बनाने के लिए जल्द ही QR Code आधारित एंट्री मैनेजमेंट सिस्टम का पायलट प्रोजेक्ट शुरू किया जाएगा।

यह व्यवस्था कुछ हद तक मेट्रो स्टेशनों की तरह होगी, जिससे स्टेशन पर केवल वेरिफाइड यात्रियों की ही एंट्री सुनिश्चित की जा सकेगी। इसके साथ ही स्टेशन परिसर में AI (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) आधारित निगरानी प्रणाली भी लागू की जाएगी।

इसके तहत कैमरों के जरिये स्टेशन के हर हिस्से जैसे प्लेटफॉर्म, कॉनकोर्स, एंट्री-एग्जिट प्वाइंट और ऐसे स्थान जहां से अनधिकृत प्रवेश की आशंका रहती है, वहां नजर रखी जाएगी।

एआई से मिलेगी संदिग्ध गतिविधियों की तुरंत जानकारी

स्टेशन पर एक एक्सेप्शन इवेंट डिस्प्ले आधारित कंट्रोल रूम भी स्थापित किया जाएगा। यहां एआई तकनीक के माध्यम से लाइव कैमरा फीड का विश्लेषण किया जाएगा। यदि किसी भी प्रकार की असामान्य या असुरक्षित गतिविधि दिखाई देती है तो निगरानी कर रहे कर्मचारियों को तुरंत अलर्ट मिल जाएगा।

पहले नई दिल्ली स्टेशन, फिर अन्य स्टेशनों पर लागू

अधिकारियों के अनुसार यह नई व्यवस्था सबसे पहले नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर लागू की जाएगी। इसके बाद इसे देश के अन्य प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर भी चरणबद्ध तरीके से लागू किया जाएगा।

रेलवे अधिकारियों ने बताया कि इस पायलट परियोजना को जल्द शुरू किया जाएगा, ताकि दीवाली और छठ जैसे त्योहारों के दौरान होने वाली भारी भीड़ से पहले एक प्रभावी व्यवस्था लागू हो सके।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार

पिंकी कुंडू

संचार साथी पोर्टल (CEIR मॉड्यूल) में हुए सुधारों ने खोए/चोरी हुए मोबाइल हैंडसेट की पहचान का परिदृश्य बदल दिया है। पहले समस्या यह थी कि जब कोई मोबाइल हैंडसेट रिकवर होता था, तो यह पता लगाना कठिन होता था कि वह कहाँ से चोरी हुआ था, और ओनर ट्रेस न होने के कारण हजारों हैंडसेट्स असल मालिकों को लौटाए नहीं जा पा रहे थे।

अब संचार साथी पोर्टल (CEIR मॉड्यूल) पर IMEI आधारित फ़िल्टरिंग से खोए/चोरी हुए मोबाइल की स्थिति तुरंत जाँची जा सकती है।

IMEI आधारित फ़िल्टरिंग: चरण-दर-चरण प्रक्रिया

Step 1: IMEI नंबर प्राप्त करें

- IMEI मोबाइल की पैकेजिंग बॉक्स या बिल/इनवॉइस पर छपा होता है।
- मोबाइल पर *#06# डायल करने पर स्क्रीन पर IMEI दिखाई देगा।
- डुअल SIM फोन में दो IMEI नंबर होते हैं — दोनों नोट करें।

Step 2: संचार साथी पोर्टल पर जाएँ

- आधिकारिक पोर्टल: Sanchar Saathi – CEIR Dashboard.
- "CEIR Services₹ सेक्शन में नेविगेट करें।

Step 3: IMEI Filtering विकल्प चुनें

- पोर्टल पर ₹Check IMEI / Trace Lost Device₹ विकल्प चुनें।
- यहाँ IMEI नंबर दर्ज करें।
- सिस्टम दोनों IMEIs को क्रॉस चेक करेगा।

Step 4: स्थिति देखें

- पोर्टल बताएगा कि मोबाइल:
 o Blacklisted (खोया/चोरी हुआ और ब्लॉक किया गया)
 o Duplicate/Cloned (IMEI कॉपी किया गया)
 o Valid/Active (सामान्य उपयोग में)

Step 5: आगे की कार्रवाई

- यदि मोबाइल खोया/चोरी हुआ दिखता है:
 o संबंधित पुलिस स्टेशन को सूचित करें।
 o पोर्टल के ₹Block/Unblock Request₹ विकल्प से डिवाइस ब्लॉक/अनब्लॉक किया जा सकता है।
 o नए सुधारों के अनुसार, ब्लॉकिंग रिक्वेस्ट में उस पुलिस उपयोगकर्ता का विवरण भी दर्ज होगा जिसने ब्लॉक किया है।

प्रमुख लाभ

- तेज़ पहचान: किसी भी पुलिस स्टेशन द्वारा रिकवर किए गए मोबाइल की स्थिति तुरंत जाँची जा सकती है।
- पारदर्शिता: ब्लॉकिंग रिक्वेस्ट में पुलिस उपयोगकर्ता विवरण दर्ज होने से जवाबदेही बढ़ती है।
- अंतर राज्यीय सहयोग: IMEI फ़िल्टरिंग पूरे भारत में उपलब्ध है, जिससे राज्यों/UTs के बीच रिकवरी आसान होती है।

संचार साथी पर अन्य सुधार

1. पैन इंडिया पुलिस स्टेशन संपर्क विवरण उपलब्ध

 o अब सभी पुलिस स्टेशनों के संपर्क विवरण LSAs और पुलिस स्टेशन उपयोगकर्ताओं को दिखाई देंगे।
 o इससे राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों की पुलिस के बीच बेहतर समन्वय और त्वरित संचार संभव होगा।

2. ट्रेसबिलिटी रिपोर्ट में क्लिक करने योग्य RequestID

 o रिपोर्ट में RequestID अब क्लिक करने योग्य है, जिससे सीधे शिकायत विवरण तक पहुँचा जा सकता है।
 o इससे खोज प्रक्रिया तेज़ और अधिक कुशल होगी।

3. शेयर की गई ट्रेसबिलिटी मैट्रिक्स का प्रदर्शन

 o पोर्टल अब राज्यों/UTs के बीच साझा किए गए ट्रेसबिलिटी डेटा की संख्या दिखाता है।
 o इससे अंतर राज्यीय सहयोग को बढ़ावा मिलेगा और रिकवरी दर में वृद्धि होगी।

4. ब्लॉकिंग रिक्वेस्ट में पुलिस उपयोगकर्ता की जानकारी

 o ब्लॉकिंग रिक्वेस्ट पेज पर अब उस पुलिस उपयोगकर्ता का विवरण भी शामिल होगा जिसने डिवाइस ब्लॉक किया है।
 o इससे पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ेगी।

प्रभाव और लाभ

- बेहतर समन्वय: पूरे देश में पुलिस संपर्क विवरण उपलब्ध होने से त्वरित सहयोग संभव होगा।
- संचालन दक्षता: क्लिक करने योग्य RequestID और IMEI फ़िल्टरिंग से समय की बचत होगी।
- पारदर्शिता: ब्लॉकिंग रिक्वेस्ट में पुलिस उपयोगकर्ता विवरण से जवाबदेही सुनिश्चित होगी।
- रिकवरी दर में वृद्धि: साझा ट्रेसबिलिटी मैट्रिक्स से राज्यों/UTs के बीच सहयोग बढ़ेगा।
- जन हितकारी सेवा: शीघ्र रिकवरी और उपकरण वापसी से नागरिकों का विश्वास बढ़ेगा।

निष्कर्ष

संचार साथी पोर्टल – CEIR मॉड्यूल में किए गए ये सुधार मोबाइल हैंडसेट रिकवरी तंत्र को मज़बूत बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं। बेहतर समन्वय, पारदर्शिता और दक्षता के साथ ये फीचर्स दिल्ली पुलिस को खोए/चोरी हुए उपकरणों को शीघ्रता से नागरिकों तक पहुँचाने में मदद करेंगे।*

खेलो इंडिया भारत सरकार का बेहतरीन उपक्रम : डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

-- डीसी ने किया अस्मिता विमेंस नॉर्थ इंडिया स्विमिंग लीग 2026 का शुभारंभ
--- एचएल सिटी में स्थित चैंपियंस एक्वेटिक अकादमी में शुरू हुई प्रतियोगिता
तैराकी में बेटियों को आगे बढ़ने का अच्छा अवसर

बहादुरगढ़, 21 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने शनिवार को अस्मिता विमेंस नॉर्थ इंडिया स्विमिंग लीग 2026 का एचएल सिटी में स्थित चैंपियंस एक्वेटिक अकादमी में शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि खेलो इंडिया के तहत आयोजित हो रही महिला तैराकी प्रतियोगिता बेटियों को आगे बढ़ने का अवसर दे रहा है। खेलो इंडिया भारत सरकार का बेहतरीन उपक्रम है। यह बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ और बेटी आगे बढ़ाओ की मुहिम को साकार कर रहा है। इस दौरान एसडीएम बहादुरगढ़ अभिनव सिवाच ने भी तैराकों का हौसला बढ़ाया

हरियाणा स्विमिंग एसोसिएशन के महासचिव एवं हरियाणा ओलंपिक संघ के उपाध्यक्ष अनिल खत्री ने डीसी और एसडीएम का स्वागत करते हुए बताया कि

तैराकी प्रतियोगिता में देश के नॉर्थ जॉन से 154 महिला तैराक भागीदारी कर रही हैं। हरियाणा स्विमिंग एसोसिएशन के तत्वाधान में यह प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। उन्होंने बताया कि इस प्रतियोगिता की विजेता खिलाड़ी अहमदाबाद में होने जा रही अस्मिता नेशनल स्विमिंग लीग में हिस्सा लेंगी।

डीसी ने कहा नवरात्रों में शुरू हुई यह प्रतियोगिता महिला तैराकों के लिए अच्छा मंच साबित होगी। डीसी ने महिला तैराकों का उत्साहवर्धन करते हुए विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि महिला तैराक आगे चल कर स्विमिंग खेल में देश का नाम रोशन करेंगी ।

एसडीएम ने आयोजकों से ग्रामीण क्षेत्र की प्रतिभाओं को स्विमिंग में आगे बढ़ाने के लिए एचएल सिटी में स्थित चैंपियंस एक्वेटिक अकादमी में अवसर देने का आह्वान किया। हरियाणा स्विमिंग एसोसिएशन के महासचिव एवं हरियाणा ओलंपिक संघ के उपाध्यक्ष अनिल खत्री ने कहा कि हम प्रशासन की पहल का स्वागत करते है। उन्होंने कहा कि देश और प्रदेश की सरकार खिलाड़ियों को आगे बढाने के लिए अच्छा कार्य कर रही है। हरियाणा ओलंपिक संघ का प्रयास रहता है कि प्रदेश के ग्रामीण आंचल से प्रतिभा आगे आए।

इस दौरान जिला सूचना एवं सम्पर्क और सूचना अधिकारी सतीश कुमार, हरियाणा तैराकी संघ के उपाध्यक्ष रवि सिंगारी, सह सचिव सुरेश जून, देशी ढाणी के निदेशक सुनील खत्री, राजेश गुलिया, अनिल शर्मा, कोच साई जाधव और पदम पाल सहित काफी संख्या में गणमान्य लोग मौजूद रहे।

सघन प्रशिक्षण जनगणना की सफलता का मुख्य आधार : ओमप्रकाश

परिवहन विशेष न्यूज

संवाद भवन में तीन दिवसीय जिला स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन, 34 फील्ड ट्रेनर्स हुए प्रशिक्षित

झज्जर, 21 मार्च। जनगणना 2027 के सफल संचालन को लेकर जिला मुख्यालय झज्जर में आयोजित तीन दिवसीय फील्ड ट्रेनर प्रशिक्षण कार्यक्रम का शनिवार को विधिवत समापन हो गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल के कुशल मार्गदर्शन में झज्जर स्थित संवाद भवन में आयोजित किया गया, जिसमें 34 फील्ड ट्रेनर्स ने भाग लेकर विस्तृत प्रशिक्षण प्राप्त किया। वहीं, चार्ज ऑफिसर्स के लिए अलग से कार्यशाला 24 मार्च को आयोजित की जाएगी।

कार्यक्रम के अंतिम दिन डिवीजन इंचार्ज ओमप्रकाश ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि सघन एवं गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण ही जनगणना जैसे व्यापक और महत्वपूर्ण कार्य की सफलता का मुख्य आधार है। उन्होंने कहा कि जनगणना केवल आंकड़ों का संकलन नहीं, बल्कि देश की विकास नीतियों और योजनाओं की आधारशिला है। ऐसे में इसमें किसी भी प्रकार की त्रुटि की गुंजाइश नहीं होनी चाहिए।

उन्होंने फील्ड ट्रेनर्स की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि यही प्रशिक्षक आगे प्रगणकों और पर्यवेक्षकों को प्रशिक्षण देंगे, जिससे पूरी प्रक्रिया की गुणवत्ता तय होगी। उन्होंने विश्वास जताया कि प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त ज्ञान और तकनीकी दक्षता जनगणना कार्य को अधिक प्रभावी, पारदर्शी और त्रुटिरहित बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

ओमप्रकाश ने जानकारी देते हुए बताया कि जनगणना 2027 के प्रथम चरण के अंतर्गत मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना का कार्य 01 मई 2026 से 30 मई 2026 तक 30 दिनों की अवधि में किया जाएगा। इससे पहले 16 अप्रैल से 30 अप्रैल 2026 तक नागरिकों को 'जनगणना पोर्टल' के माध्यम से ऑनलाइन स्व-गणना की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाएगी, जिससे आमजन स्वयं अपने परिवार से संबंधित जानकारी दर्ज कर सकेंगे।

उन्होंने आगे बताया कि दूसरे चरण में फरवरी 2027 के दौरान जनसंख्या गणना का कार्य किया जाएगा। प्रथम चरण के पश्चात चार्ज स्तर पर प्रगणकों और पर्यवेक्षकों का प्रशिक्षण आयोजित किया जाएगा, ताकि फील्ड स्तर पर सभी कार्य सुव्यवस्थित और सुचारू रूप से संपन्न हो सकें।

कार्यक्रम के दौरान मास्टर ट्रेनर डॉ. ललित कुमार और जसबीर सिंह द्वारा प्रतिभागियों को जनगणना 2027 के निर्धारित मानकों के अनुरूप विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया। इसमें मकान सूचीकरण, परिवार विवरण संकलन, डिजिटल डेटा एंट्री, मोबाइल एप के उपयोग तथा फील्ड में आने वाली व्यावहारिक समस्याओं के समाधान के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

अंत में अधिकारियों ने निर्देश दिए कि जनगणना से जुड़े सभी कार्यों की पूर्व तैयारी सुनिश्चित की जाए तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों को गंभीरता और प्रभावशीलता के साथ लागू किया जाए, ताकि प्रत्येक स्तर पर स्पष्ट दिशा-निर्देश और तकनीकी जानकारी उपलब्ध रहे और कार्य बिना किसी त्रुटि के संपन्न हो सके।

अखिल भारतीय सेवा संघ शाखा बरवाला महिला विंग का चयन

हरियाणा हिसार :राजेश सलूजा

गत दिनों दिनांक 20 मार्च 2026 शुक्रवार को बाद दोपहर ओमप्रकाश वधवा प्रांतीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष अखिल भारतीय सेवा संघ के नेतृत्व में अखिल भारतीय सेवा संघ महिला विंग शाखा बरवाला का वर्ष 2026-2027 के लिए सर्व सम्मति से चयन हुआ ।

अपने संबोधन में प्रांतीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष ओम प्रकाश वधवा ने कहा कि किसी भी संस्था में जुड़ने से पहले व्यक्ति को स्वस्थ होना जरूरी है, उसके बाद अपने माता-पिता व परिवार की सेवा करना और उसके बाद ही समाज सेवा संभव है ।नव चयनित सदस्यों को सलाह दी कि हमेशा नेक नियत से समाज हित कार्य करें जैसे मेडिकल कैंप लगाना, ब्लड डोनेशन कैंप लगाना, पौधा रोपण करना, जरूर मंद को वस्त्र आदि दान करना, स्वच्छता अभियान चलाना, शिक्षण संस्थानो में जाकर अध्यापक दिवस व राष्ट्रीय त्योहार मनाना आदि कार्य करें

नई कार्यकारिणी में संरक्षक के तौर पर वीना चुघ, अध्यक्ष आशा रहेजा ,सचिव सिमरन पाहुजा और कोषाध्यक्ष निशु वधवा को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई ।नव नियुक्त सभी सदस्यों को शुभकामनाएं दी ।

नव नियुक्त महिला शाखा अध्यक्ष श्रीमती आशा रहेजा ने प्रांतीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष को आश्वासन दिया कि हम सब टीम के सदस्य मिलजुल कर सामाजिक हित में कार्य करेंगे और समय-समय पर प्रोजेक्ट लगाएंगे और अखिल भारतीय सेवा संघ (पुरुष) शाखा बरवाला के साथ कदम से कदम मिलाकर काम करेंगे व सहयोग करेंगे ।

नई कार्यकारिणी गठन के बाद जलपान का आयोजन किया गया । इस अवसर पर अनीता भाटिया, वीना कक्कड़, राज आनंद, रीमा रहेजा, उषा , द्रौपदी पाहुजा, अनीता कक्कड़, आशा सरदाना, सुनीता पठनेजा, निर्मल कथूरिया, कविता गाबा , सुनीता भाटिया आदि सदस्य मौजूद रहे ।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने किया नागरिक अस्पताल का औचक निरीक्षण

परिवहन विशेष न्यूज

मरीजों को गुणवत्तापूर्वक चिकित्सा सुविधाएं देने के दिए निर्देश
डीसी ने अस्पताल के विस्तार के लिए निर्माणाधीन बिल्डिंग का भी लिया जायजा

बहादुरगढ़, 21 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने शनिवार को एसडीएम बहादुरगढ़ अभिनव सिवाच को साथ लेकर नागरिक अस्पताल बहादुरगढ़ का औचक निरीक्षण किया। डीसी ने पूरे अस्पताल परिसर का दौरा करते हुए अस्पताल प्रबंधन को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

डीसी ने कहा कि अस्पताल में पहुंचने वाले हर मरीज को अच्छी तरह से चिकित्सा सुविधा मिले। अस्पताल परिसर में स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। डीसी ने हाजिरी रजिस्टर सहित अन्य सुविधाओं को चेक किया। मरीजों और उनके साथ आए परिजनों से भी अस्पताल में मिल रही चिकित्सा सुविधाओं की जानकारी प्राप्त की।

डीसी ने नवजात शिशु केयर यूनिट (एसएनसीयू) ट्रामा सेंटर का भी निरीक्षण किया और प्रभारी मेडिकल ऑफिसर से भी जानकारी प्राप्त की। डीसी ने कहा कि शासन प्रशासन का निरंतर प्रयास है कि नागरिकों को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं मिले। इसमें किसी भी स्तर पर कोताही सहन नहीं होगी।

कार्यवाहक पीएमओ डॉक्टर विनय कुमार ने डीसी को अस्पताल में मौजूदा सुविधाओं के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए निर्माणाधीन बिल्डिंग की प्रगति के बारे में जानकारी दी। डीसी ने कहा कि तत्काल कोई भी जरूरत होने पर सीएसआर के तहत सुविधा मुहैया कराने को लेकर प्रशासन तत्पर रहता है। इस दौरान डॉक्टर प्रवीण डॉक्टर दीपक सहित अन्य डॉक्टर मौजूद रहे।

घरेलू गैस की कालाबाजारी रोकने के लिए सख्त कार्रवाई, 9 सिलेंडर जब्त

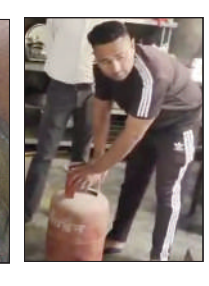

जिलाभर में चेकिंग अभियान जारी, उपभोक्ताओं से अफवाहों से बचने की अपील

झज्जर, 21 मार्च। जिला प्रशासन द्वारा घरेलू गैस (एलपीजी) की कालाबाजारी पर अंकुश लगाने के लिए सख्त कदम उठाए जा रहे हैं। इसी कड़ी में डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल के दिशा-निर्देशों के तहत शनिवार को खाद्य एवं आपूर्ति विभाग की टीम ने झज्जर शहर के विभिन्न स्थानों पर छापेमारी अभियान चलाया, जिसमें 9 गैस सिलेंडर जब्त किए गए।

यह जानकारी देते हुए जिला खाद्य आपूर्ति नियंत्रक राजेश्वर मुदगिल ने बताया कि घरेलू गैस के दुरुपयोग को रोकने के लिए विभाग लगातार सक्रिय रूप से निगरानी कर रहा है। उन्होंने बताया कि सहायक खाद्य एवं पूर्ति अधिकारी अमरजीत सिंह के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा नियमित रूप से छापेमारी अभियान चलाए जा रहे हैं, ताकि किसी भी प्रकार की अनियमितता पर तुरंत कार्रवाई की जा सके।

डीएफएससी ने स्पष्ट किया कि जिले में रसोई गैस (एलपीजी) की पर्याप्त उपलब्धता है और आम नागरिकों को किसी प्रकार की कमी का सामना नहीं करना पड़ रहा है। प्रशासन द्वारा जिले में गैस सिलेंडरों की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है। वर्तमान में जिला झज्जर में 26 गैस एजेंसियां कार्यरत हैं, जो उपभोक्ताओं को निर्बाध रूप से गैस आपूर्ति उपलब्ध करा रही हैं।

उन्होंने आगे बताया कि प्रत्येक पात्र परिवार को निर्धारित नियमों के अनुसार गैस सिलेंडर उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। शहरी क्षेत्रों में 25 दिन के अंतराल पर तथा ग्रामीण क्षेत्रों में 45 दिन के अंतराल पर सिलेंडर वितरण किया जा रहा है, जिससे सभी उपभोक्ताओं को समय पर सुविधा मिल सके। राजेश्वर मुदगिल ने उपभोक्ताओं से अपील करते हुए कहा कि वे केवल आवश्यकता के अनुसार ही गैस सिलेंडर प्राप्त करें और अनावश्यक भंडारण से बचें। उन्होंने कहा कि इस तरह की गतिविधियां न केवल नियमों का उल्लंघन हैं, बल्कि अन्य उपभोक्ताओं में अनावश्यक भय और असमंजस की स्थिति भी उत्पन्न करती हैं। उन्होंने नागरिकों से यह भी आग्रह किया कि वे किसी भी प्रकार की अफवाहों पर ध्यान न दें और प्रशासन द्वारा दी जा रही आधिकारिक जानकारी पर ही विश्वास करें। प्रशासन सभी पात्र उपभोक्ताओं को नियमानुसार गैस आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के तहत मांगी जा सकती है पुलिस स्टेशन की सीसीटीवी

नरेश गुणपाल

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के तहत आम नागरिकों द्वारा सार्वजनिक कार्यालयों से भी सूचनाएं मांगी जा सकती है।

पुलिस स्टेशन की सीसीटीवी रिकॉर्डिंग/फुटेज प्राप्त करने के अधिकार को लेकर कानून अब काफी स्पष्ट हो चुका है। माननीय उच्चतम न्यायालय के परमवीर सिंह बनाम बलजीत सिंह (2020) के ऐतिहासिक निर्णय एवं दिनांक 03.04.2018 के आदेश के माध्यम से एसएलपी (क्रिमिनल) संख्या 2302/2017 में शफी मोहम्मद बनाम हिमाचल प्रदेश राज्य (2018) 5 एससीसी 311 के रूप में, गृह मंत्रालय द्वारा एक केंद्रीय निगरानी निकाय (जिसे आगे ₹सीओबी₹ कहा गया है) स्थापित करने का निर्देश दिया था , ताकि अपराध स्थल पर जांच के दौरान वीडियोग्राफी के उपयोग से संबंधित कार्य योजना को लागू किया जा सके। माननीय उच्चतम न्यायालय ने डीके बसु बनाम पश्चिम बंगाल राज्य और अन्य (2015) 8 एससीसी 744 में जारी निर्देशों पर विचार करते हुए यह माना कि प्रत्येक राज्य में एक निगरानी तंत्र बनाने के लिए और निर्देश जारी करने की आवश्यकता है, जिसके तहत एक स्वतंत्र समिति सीसीटीवी कैमरा रिकॉर्डिंग/फुटेज का अध्ययन कर सके और समय-समय पर उस पर अपनी टिप्पणियों की रिपोर्ट प्रकाशित कर सके। सीओबी को इस संबंध में जल्द से जल्द उचित निर्देश जारी करने का भी निर्देश दिया गया था। इसकी प्रक्रिया और सुलभ हो गई है। प्रभावित व्यक्ति या पीड़ित के लिए इसे प्राप्त करना अधिक आसान और तर्कसंगत हो गया है।

किन आधारों पर मांगी जा सकती है रिकॉर्डिंग ?

मानवाधिकार उल्लंघन :-

यदि पुलिस स्टेशन में किसी के साथ मारपीट, दुर्व्यवहार या अवैध हिरासत जैसी घटना हुई है।

पारदर्शिता :-

यह सुनिश्चित करने के लिए कि पुलिस ने कानून के दायरे में रहकर काम किया है।

साक्ष्य :-

पुलिस की थ्यूरी और वास्तविक घटना में अंतर है, तो बचाव के लिए इसे साक्ष्य के रूप में मांगा जा सकता है।

सीसीटीवी रिकॉर्डिंग/फुटेज प्राप्त करने के मुख्य तरीके: -

सूचना का अधिकार अधिनियम-2005:-

पुलिस विभाग के जन सूचना अधिकारी को आवेदन देकर सीसीटीवी रिकॉर्डिंग/फुटेज की सीडी या पेनड्राइव में कॉपी मांग सकते हैं।

न्यायालय:-

यदि मामला पहले से न्यायालय में है, तो अधिवक्ता के माध्यम से धारा 91 सीआरपीसी (अब भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की संबंधित धारा) के तहत सीसीटीवी रिकॉर्डिंग/फुटेज सुरक्षित रखने और मंगवाने की अर्जी दी जा सकती है।

राज्य मानवाधिकार आयोग में शिकायत दर्ज करके भी सी सी टी वी रिकॉर्डिंग/फुटेज की मांग की जा सकती है।

महत्वपूर्ण कानूनी बिंदु:-

सी सी टी वी रिकॉर्डिंग/फुटेज का संरक्षण :

माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्देशानुसार, पुलिस स्टेशनों की सीसीटीवी रिकॉर्डिंग/फुटेज कम से कम 12 से 18 महीने तक सुरक्षित रखी जानी चाहिए।

गोपनीयता का तर्क :-

अक्सर पुलिस 'सुरक्षा' या 'गोपनीयता' का हवाला देकर सीसीटीवी रिकॉर्डिंग/फुटेज देने से मना करती है। लेकिन माननीय उच्चतम न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि पुलिस स्टेशन के सार्वजनिक हिस्सों (जैसे ड्यूटी ऑफिसर डेस्क, लॉकअप, गलियारे) की सीसीटीवी रिकॉर्डिंग/फुटेज मानवाधिकारों के संरक्षण के लिए दी जा सकती है।

त्वरित कार्रवाई :-

सीसीटीवी रिकॉर्डिंग/फुटेज की आवश्यकता है, तो तुरंत (24-48 घंटे के भीतर) संबंधित पुलिस अधीक्षक या न्यायालय को लिखित पत्र दें, ताकि डेटा डिलीट या ओवरराइट न हो जाए।

यह सावधानी बरतें :-

जनहित या किसी अन्य के लिए सूचना मांग रहे हैं, तो यह स्पष्ट करना बेहतर होगा कि आप यह सूचना किसी निजी हित के लिए नहीं, बल्कि न्याय सुनिश्चित करने के लिए मांग रहे हैं।

नवदुर्गा में नारी जीवन का दर्शनः शैलपुत्री से सिद्धिदात्री तक चेतना की अद्भुत यात्रा

भारतीय संस्कृति में पूजित माँ दुर्गा के नौ रूप केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि हर स्त्री के जीवन की आंतरिक चेतना के नौ चरण हैं। समाजसेविका नोनिता खुराना ने बताया कि हर स्त्री के भीतर बसते हैं माँ दुर्गा के नौ रूप, जीवन के हर चरण में जागती है नई शक्ति

आगरा, संजय साग़र सिंह। नारी शक्ति के आध्यात्मिक और दार्शनिक स्वरूप को नई दृष्टि देते हुए समाजसेविका एवं आत्मनिर्भर भारत एक पहल की अध्यक्ष नोनिता खुराना ने कहा कि भारतीय संस्कृति में पूजित माँ दुर्गा के नौ रूप केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि हर स्त्री के जीवन की आंतरिक चेतना के नौ चरण हैं।

उन्होंने बताया कि प्रत्येक नारी अपने जीवन में इन नवदुर्गा स्वरूपों से होकर गुजरती है। कभी सहज, कभी साध्वी, कभी विद्रोहिणी और अंततः ब्रह्मस्वरूपा बनकर पूर्णता प्राप्त करती है। उन्होंने अपने विचारों को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हुए नारी जीवन की इस यात्रा को आत्मचेतना से ब्रह्म तक का विस्तार बताया।

नारी जीवन के नौ चरणों की दार्शनिक व्याख्याः

शैलपुत्रीः मासूमियत और जड़ों से जुड़ाव नारी जीवन की शुरुआत शुद्धता, सरलता और प्रकृति से गहरे संबंध के साथ होती है। यह अवस्था आत्मा के प्रथम प्रश्न "मैं कौन हूँ?" की ओर संकेत करती है। ब्रह्मचारिणीः ज्ञान और साधना की खोज इस चरण में स्त्री आत्मअनुशासन, शिक्षा और आत्मचिंतन के मार्ग पर अग्रसर होती है। यह आत्मसाक्षात्कार की दिशा में पहला प्रयास है।

चंद्रघंटाः सौंदर्य और सजगता का संतुलन यौवन की अवस्था में स्त्री सौंदर्य के साथ साहस और सजगता को धारण करती है। यह भीतर की शक्ति और जागरूकता का प्रतीक है। कूष्मांडाः सृजन और ऊर्जा का उद्भव यह चरण सृजनात्मकता और मातृत्व की ऊर्जा का प्रतीक है, जहां स्त्री जीवन को जन्म देने और नए विचारों को आकार देने में सक्षम होती है।

स्कंदमाताः संरक्षण और मातृत्व का विस्तार

माँ बनने के बाद स्त्री केवल सृजन नहीं करती, बल्कि अपने परिवार और संतानों की रक्षा भी करती है। यह उसका रक्षक और पोषक रूप है। कात्यायनीः अन्याय के विरुद्ध विद्रोह जब स्त्री अन्याय और असत्य के खिलाफ खड़ी होती है, तब वह कात्यायनी का स्वरूप धारण करती है। यह सामाजिक परिवर्तन की चेतना है।

कालरात्रिः संघर्ष और आत्ममंथन की रात

यह जीवन का कठिन दौर है, जब स्त्री अपने भय, पीड़ा और संघर्षों से जूझती है। यही चरण उसे भीतर से मजबूत बनाता है। महागौरीः शुद्धता और आंतरिक शांति संघर्ष के बाद प्राप्त होने वाली शांति और निर्मलता इस अवस्था का प्रतीक है, जहां स्त्री भीतर से संतुलित और जागरूक होती है। सिद्धिदात्रीः पूर्णता और ब्रह्मस्वरूपा यह नारी जीवन की अंतिम अवस्था है, जहां वह आत्मसिद्ध होकर पूर्णता को प्राप्त करती है और सृष्टि को दिशा देने वाली चेतना बन जाती है।

आखिर में उन्होंने बताया कि नारी केवल एक भूमिका नहीं, बल्कि एक सतत विकसित होती चेतना है। माँ दुर्गा के ये नौ रूप हर स्त्री के भीतर विद्यमान हैं। जरूरत है तो केवल उन्हें पहचानने और आत्मसात करने की। यही पहचान नारी को उसकी वास्तविक शक्ति और ब्रह्मस्वरूपा होने का बोध कराती है।

श्रीकृष्ण कली पीठ में विश्व कल्याणार्थ शतचंडी महायज्ञ का शुभारंभ

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गोपीनाथ बाजार स्थित श्री कृष्ण कली पीठ में विगत लगभग 50 वर्षों से निरंतर चल रहे नवरात्रि महोत्सव के उपलक्ष्य में वर्तमान वासंतिक नवरात्रि में विगत 19 मार्च से विश्व कल्याणार्थ विशाल शतचंडी महायज्ञ का शुभारंभ मां कृष्णा काली के सानिध्य में प्रारंभ हो चुका है। जिसका समापन आगामी 28 मार्च 2026 को 108 कन्या पूजन, बटुक पूजन, सुवासिनी पूजन, पूर्णाहुति एवं भंडारा प्रसाद के साथ होगा।

श्रीकृष्ण काली पीठाधीश्वर डॉ. केशवाचार्य महाराज ने बताया कि श्रीधाम वृन्दावन का अति प्राचीन स्थल श्रीकृष्ण काली पीठ केशीघाट पर स्थित है। जहां मां का स्वयंभू प्रकट चतुर्भुजी कसौटी शिला का अचल विग्रह विद्यमान है एवं गोपीनाथ बाजार में मां कृष्ण काली का चल विग्रह विद्यमान है ।ब्रज की आराध्या श्रीराधा रानी के प्रेम एवं अनन्य गोप पर कृपा करने हेतु भगवान श्रीकृष्ण ने काली रूप धारण किया एवं स्वयं श्रीकृष्ण ब्रज वृन्दावन में श्रीकृष्ण काली के रूप में प्रकटित हुए।

उन्होंने बताया कि पूर्व में माता सती के केश यहां गिरे, इसलिए इस स्थान का नाम के केश घाट था ।किंतु बाद में जब भगवान श्रीकृष्ण ने केशी दैत्य का उद्धार किया, तभी से यह स्थल केशीघाट के रूप में प्रसिद्ध हुआ ।जहां केश गिरे वही स्थल अद्यावधि श्रीकृष्ण काली पीठ के रूप में केशीघाट पर विद्यमान है ।दुर्गा सप्तशती में भगवती के 108 नामों में मां कृष्ण काली को ₹पुरुषाकृति₹ नाम से उल्लिखित किया गया है ।कालांतर में मां कृष्ण काली का चल विग्रह गोपीनाथ बाजार में विराजमान है।

जो भक्त मां के दर्शन हेतु मंदिर में आते हैं उनकी मनोकामना की पूर्ति, वंश की वृद्धि, संतान की प्राप्ति, दुख, कष्ट, दरिद्रता से मुक्ति एवं सुख समृद्धि की पूर्ति होती है। कलयुग में यह स्थल माता की साधना, आराधना एवं भटके हुए मानव के शीघ्र संकल्पों की पूर्ति का स्थल है।

लुवास के वैज्ञानिकों ने राष्ट्रीय स्तर की संवेदनशीलता कार्यशाला में सक्रिय भागीदारी की

हरियाणा हिसारः राजेश सलूजा

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (लुवास), हिसार के चार वैज्ञानिकों ने नई दिल्ली में आयोजित एक दिवसीय संवेदनशीलता कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लिया। पशुपालन एवं डेयरी विभाग, भारत सरकार द्वारा आयोजित इस कार्यशाला का विषय था—"मॉक ड्रिल्स में पहचानी गई कमियों को दूर करना"।

कार्यशाला का आयोजन एपी शिंदे सिम्पोजियम हॉल, नैसकॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली में हुआ। इसका मुख्य उद्देश्य जूनोटिक रोगों की रोकथाम, नियंत्रण तथा आपातकालीन परिस्थितियों में विभिन्न विभागों के बीच समन्वित प्रतिक्रिया तंत्र को मजबूत करना था। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय वन हेल्थ मिशन के अंतर्गत आयोजित किया गया, जो 'वन हेल्थ' अवधारणा पर आधारित है।

माननीय कुलपति प्रोफेसर (डॉ.) विनोद वर्मा के मार्गदर्शन में लुवास से डॉ. राजेश, डॉ. विजय जाधव, डॉ. स्वाति दहिया तथा डॉ. मनेश कुमार ने इस कार्यशाला में हिस्सा लिया।

इस कार्यशाला में विभिन्न राज्य पशुपालन विभागों, निदान प्रयोगशालाओं, विश्वविद्यालयों तथा रिमाउंट वेटरनरी कोर में कार्यरत पशु चिकित्सक (वेटरिनेरियन) प्रतिभागी के रूप में शामिल हुए। विभिन्न सत्रों का संचालन ब्रिगेडियर एम. एम. रामचंद्र, निदेशक, नेशनल सिक्योरिटी काउंसिल सेक्रेटेरिएट (NSCS) ने किया। उन्होंने तकनीकी सत्रों का कुशलतापूर्वक संयोजन एवं मॉडरेशन किया, जिससे चर्चाएं अधिक प्रभावी एवं केंद्रित रहीं।

कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों को ज़ूनोसिस से संबंधित मॉक ड्रिल्स के डिजाइन, संचालन एवं मूल्यांकन के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। एक प्रमुख सत्र में एवियन इन्फ्लूएंजा (बर्ड फ्लू) महामारी के सिमुलेशन पर आधारित टेबल-टॉप अभ्यास कराया गया, जिसमें विभिन्न विभागों की भूमिकाओं तथा 'वन हेल्थ' फ्रेमवर्क के अंतर्गत समन्वित कार्रवाई पर जोर दिया गया।

एक अन्य सत्र में जैविक प्रयोगशाला के निकट उच्च स्तरीय बैठक के दौरान जल-जनित रोग प्रकोप का सिमुलेशन अभ्यास किया गया, जिसमें आपातकालीन प्रबंधन, विभागीय समन्वय, त्वरित निर्णय-निर्माण तथा प्रभावी संचार पर विशेष बल दिया गया।

इसके अतिरिक्त, प्रतिभागियों को राज्य एवं केंद्र स्तर पर वन हेल्थ गवर्नेंस फ्रेमवर्क की जानकारी प्रदान की गई, जो जैविक खतरों, बायोसिक्योरिटी तथा संभावित जैव आतंकवाद से निपटने हेतु संरचित व्यवस्था सुनिश्चित करता है।

लुवास के वैज्ञानिकों ने बताया कि यह कार्यशाला अत्यंत उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक रही। ब्रिगेडियर एम. एम. रामचंद्र के कुशल संचालन से सत्रों में गहन चर्चा हुई, जिससे प्रतिभागियों की आपदा प्रबंधन, रोग नियंत्रण तथा अंतर-विभागीय समन्वय संबंधी क्षमताओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। ऐसे प्रशिक्षण भविष्य में ज़ूनोटिक रोगों के प्रकोप को प्रभावी ढंग से रोकने एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

जनसंपर्क अधिकारी डॉ नीलेश सिंधु ने बताया की ये भागीदारी लुवास की राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ती सक्रियता को दर्शाती है, जो पशु स्वास्थ्य, मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के बीच मजबूत एकीकरण के लिए निरंतर प्रयासरत है।

ससुंद्रा चेकिंग प्वाइंट पर हंगामे की असली वजह आई सामने, अवैध वसूली नहीं एक्सपायर परमिट बना विवाद की जड़

फोरलेन जाम करने वाले ट्रक चालक के दस्तावेज निकले अवैध, कार्रवाई से बचने के लिए किया हंगामा

नागपुर—भोपाल नेशनल हाईवे पर चेकिंग के दौरान शुरू हुआ विवाद, ड्राइवर ने ट्रक आड़ा खड़ा कर बनाया दबाव

बैतूल। नागपुर—भोपाल नेशनल हाईवे पर मुलताई के पास स्थित ससुंद्रा चेकिंग प्वाइंट को लेकर जिस तरह से अवैध वसूली और मारपीट की कहानी सामने आई थी, अब उसी मामले में एक के बाद एक ऐसे तथ्य सामने आ रहे हैं जो पूरे घटनाक्रम की दिशा ही बदल रहे हैं। जिस ट्रक चालक के साथ कथित वसूली और मारपीट का आरोप लगाया गया, उसी चालक के वाहन के दस्तावेजों की स्थिति ने पूरी कहानी को संदेह के घेरे में ला खड़ा किया है।

- परमीट खत्म, पीयूसी खत्म, फिर भी चला रहा था वाहन

जानकारी के अनुसार वाहन क्रमांक सीजी 04 क्यूएफ 5918 के चालक सुरेश जाट, निवासी देवास मध्यप्रदेश का नेशनल परमीट 18 मार्च 2026 को ही समाप्त हो चुका था। इसके अलावा वाहन का पीयूसी भी 17 मार्च 2026 को खत्म हो गया था। यानी जिस वाहन को चेकिंग के दौरान रोका गया, वह जरूरी दस्तावेजों के बिना ही नेशनल हाईवे पर चल रहा था। ऐसे में सवाल यह उठने लगा है कि वैध दस्तावेजों के बिना पकड़े जाने के बाद क्या विवाद जानबूझकर खड़ा किया गया।

- कार्रवाई से बचने के लिए आड़ा खड़ा किया ट्रक

परिवहन विभाग के कर्मचारियों के अनुसार चेकिंग के दौरान वाहन को रोका गया तो चालक ने पहले वहां से निकलने की कोशिश की, लेकिन जब वह सफल नहीं हुआ तो उसने चेकिंग प्वाइंट से लगभग 900 मीटर आगे जाकर ट्रक को फोरलेन पर आड़ा खड़ा कर दिया। इसके बाद पीछे आ रहे अन्य ट्रक चालकों ने भी वाहन खड़े कर दिए और देखते ही देखते हाईवे पर जाम लग गया। बताया जा रहा है कि जाम लगभग दो किलोमीटर तक फैल गया और आने-जाने वाले कई वाहन फंस गए।

- बैरियर प्रभारी ने आरोपों को बताया निराधार

ससुंद्रा चेक पोस्ट के बैरियर प्रभारी अनिमेष जैन ने स्पष्ट रूप से कहा है कि किसी भी वाहन चालक से अवैध वसूली नहीं की गई है। उनके अनुसार वाहन चालक सुरेश जाट नशे की हालत में था और उसके वाहन के दस्तावेज भी वैध नहीं थे। विभाग की ओर से पीयूसी खत्म होने पर पांच हजार रुपए और बिना नेशनल परमीट वाहन चलाने पर 30 हजार 900 रुपए के अर्थदंड की कार्रवाई की बात कही गई थी, जिसके बाद चालक ने हंगामा शुरू कर दिया। बैरियर प्रभारी ने यह भी कहा कि चेकिंग पूरी तरह नियमों के तहत की जा रही थी।

- नियमित चेकिंग के दौरान बढ़ा विवाद

परिवहन विभाग के अनुसार हर महीने के तीसरे और चौथे सप्ताह में दुपहिया से लेकर भारी वाहनों तक की दस्तावेजों की जांच की जाती है। इसी क्रम में ससुंद्रा के पास वाहनों की चेकिंग की जा रही थी। जांच के दौरान जब सुरेश जाट के वाहन के दस्तावेजों की वैधता खत्म पाई गई, तो उस पर कार्रवाई की तैयारी की गई। लेकिन कार्रवाई से बचने के लिए चालक ने अन्य ट्रक चालकों को भी उकसाया और मामला अचानक बड़ा बन गया।

- गौवंश तस्करी रोकने के लिए भी की जाती है सख्त चेकिंग

बैरियर प्रभारी अनिमेष जैन ने बताया कि नागपुर—भोपाल नेशनल हाईवे से बड़ी संख्या में कंटेनर और बंद वाहनों के जरिए पशुओं की तस्करी की शिकायतें लगातार मिलती रहती हैं। राज्य सरकार के निर्देशों के अनुसार कई बार वाहनों की सघन जांच करनी पड़ती है। उन्होंने कहा कि कई मामलों में वैध दस्तावेज नहीं होने पर वाहन चालक विवाद खड़ा कर देते हैं ताकि चेकिंग पर दबाव बनाया जा सके। राष्ट्रीय हिंदू सेना के प्रदेश अध्यक्ष दीपक मालवीय ने कहा कि यदि पुलिस और आरटीओ समय-समय पर वाहनों की सख्त चेकिंग न करें तो बड़ी संख्या में गोवंश की तस्करी लगातार बढ़ती रहेगी। उन्होंने यह भी कहा कि कई मामलों में नशे से जुड़े अवैध कारोबार में कंटेनर और ऐसे वाहन चालक लिप्त पाए गए हैं, जो चेकिंग के दौरान भागने की कोशिश करते हुए पकड़े जाते हैं।

- हंगामे के बाद खुलने लगी पूरी सच्चाई

पूरे घटनाक्रम के बाद अब यह मामला जाम या विवाद तक सीमित नहीं रह गया है। वाहन के दस्तावेजों की स्थिति, बैरियर प्रभारी का बयान और कार्रवाई से बचने की कोशिश जैसे तथ्य यह संकेत दे रहे हैं कि जिस तरह से अवैध वसूली का आरोप लगाया गया, वह पूरी तरह एकतरफा भी हो सकता है। अब प्रशासनिक स्तर पर जांच के बाद ही पूरी सच्चाई सामने आएगी, लेकिन अब तक सामने आए तथ्यों ने ससुंद्रा चेकिंग प्वाइंट के पूरे विवाद को नई दिशा जरूर दे दी है।

सार छंद गीत : नवरात्रि

माँ के द्वारे जो भी आए, माँ भर देती झोली।
ममता की मूरत है मैया, दिखती है माँ भोली।।

पावन है नवरात्रि हमारी, लगा हुआ है मेला।
दर्शन करते मानव जन भी, सुंदर है यह बेला।।
धूप दीप नैवेद्य आरती,सजी हुई है रोली।
माँ के द्वारे जो भी आए, माँ भर देती झोली।।

आदिशक्ति जगदम्बा माता, तेरी महिमा न्यारी।
तेरा पूजन नौ दिन होता, मैया मेरी प्यारी।।
दिया चढ़ावा मन से सेवक, पहने मैया चोली।
माँ के द्वारे जो भी आए, माँ भर देती झोली।।

अंबे गौरी मैया मेरी, विनय सुनो तुम माता।
संकट बाधा हरते रहना, माँ तुम से है नाता।।
पूजन तेरा निशदिन करता, सुंदर माँ की बोली।
माँ के द्वारे जो भी आए, माँ भर देती झोली।।

मातु भवानी दुर्गा मैया, नव रात्रें में आई।
पाप मिटाने जग में जन्मीं , धर्म ध्वजा लहराई।।
दुर्गा काली रूप धरें माँ, निकले मुख से गोली।
माँ के द्वारे जो भी आए, माँ भर देती झोली।।

शैलेन्द्र पयासी, साहित्यकार
विजयराघवगढ़, कटनी, एमपी

प्री-प्राइमरी वार्षिक समारोह में नन्हे-मुन्नों ने बिखेरा प्रतिभा का रंग

हरियाणा हिसार :राजेश सलूजा

चंडीगढ़, मॉडर्न कॉम्प्लेक्सः GMMS MHC MM स्कूल परिसर में प्री-नर्सरी से लेकर बालवाटिका तक के विद्यार्थियों के लिए प्री-प्राइमरी वार्षिक समारोह बड़े ही उत्साह और हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य छोटे बच्चों की प्रतिभा, रचनात्मकता और उपलब्धियों को प्रोत्साहित करना था।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रीति अरोड़ा, सना एवं रमेश गिल्होत्रा (संपादक, हरियाणा न्यूज फ्लैश) उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त श्री मुकेश कुमार (भारत विकास परिषद सदस्य) तथा श्रीमती निशा (स्कूल मैनेजमेंट कमेटी सदस्य) भी विशेष रूप से मौजूद रहीं।

इस अवसर पर छोटे बच्चों को उनकी उपलब्धियों के लिए प्राइज डिस्ट्रीब्यूशन किया गया और उन्हें सम्मानित किया गया। अतिथियों ने विद्यार्थियों की प्रस्तुतियों और रचनात्मक कार्यों की सराहना करते हुए उनका उत्साहवर्धन किया।

अतिथियों ने अपने संबोधन में कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

स्कूल इंचार्ज भूपिंदर कौर ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उनकी मेहनत और उपलब्धियों की सराहना की तथा उन्हें निरंतर आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित किया।

वहीं क्लास इंचार्ज श्रीमती नीरज (NTT अध्यापिका) ने भी बच्चों को सकारात्मक सोच, अनुशासन और निरंतर प्रयास के महत्व के बारे में बताया।

कार्यक्रम के अंत में उपस्थित सभी अतिथियों, अभिभावकों और शिक्षकों ने आयोजन की सराहना करते हुए इसे सफल और प्रेरणादायक बताया।

मथुरा में शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई ईद की नमाजः सिविल डिफेंस और प्रशासन की रही पैनी नजर

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा। जनपद में आज ₹ईद-उल-फितर₹ का पर्व परंपरागत श्रद्धा और उल्लास के साथ शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। शाही ईदगाह मस्जिद में निर्धारित समय प्रातः 08:30 बजे मुख्य नमाज अदा की गई, जबकि शहर की अन्य मस्जिदों में भी सुबह 07:00 से 09:00 बजे के मध्य नमाज सकुशल संपन्न हुई। जिला मजिस्ट्रेट श्री चन्द्र प्रकाश सिंह के कुशल निर्देशन में पूरे नगर क्षेत्र को सेक्टरों में विभाजित कर सुरक्षा के कड़े प्रबंध किए गए थे।

इस अवसर पर व्यवस्थाओं को सुचारू बनाए रखने के लिए सिविल डिफेंस मथुरा के प्रभारी अधिकारी एवं अपर जिलाधिकारी (नमामि गंगे) नन्द प्रकाश मौर्य के मार्गदर्शन में टीम पूरी तरह सक्रिय रही। सहायक उप नियंत्रक नीरज श्रीवास्ता के साथ वार्डन पोस्ट संख्या 01 के पोस्ट वार्डन अशोक यादव की टीम औरंगाबाद और महत्वपूर्ण स्थलों एवं संवेदनशील स्थलों पर पर मुस्तैद रही। टीम के सदस्यों ने पुलिस प्रशासन के साथ समन्वय बनाकर यातायात प्रबंधन और जन-व्यवस्था संभालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सुरक्षा के दृष्टिगत विभिन्न क्षेत्रों में तैनात मजिस्ट्रेट्स ने अपने-अपने आवंटित सेक्टरों में निरंतर भ्रमणशील रहकर स्थिति का जायजा लिया। शाही ईदगाह क्षेत्र में डिप्टी कलेक्टर, डीग गेट व मसानी क्षेत्र में तहसीलदार और होलीगेट क्षेत्र में जिला प्रोबेशन अधिकारी सहित अन्य जोनल व सेक्टर मजिस्ट्रेट अपनी ड्यूटी पर तैनात रहे। प्रशासनिक अधिकारियों और सिविल डिफेंस के वालंटियर्स की सजगता के चलते संपूर्ण जनपद में नमाज का कार्यक्रम अत्यंत व्यवस्थित तरीके से संपन्न हुआ।

बच्चों के अधिकारों से संबंधित कानूनी मुद्दे

● विजय गर्ग

बच्चे समाज के सबसे कमजोर सदस्य हैं और उनकी सुरक्षा, विकास और गरिमा सुनिश्चित करने के लिए उन्हें विशेष संरक्षण की आवश्यकता होती है। दुनिया भर में बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए विभिन्न कानून और अंतर्राष्ट्रीय समझौते बनाए गए हैं। सबसे महत्वपूर्ण वैश्विक रूपरेखाओं में से एक है बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन, जो यह मान्यता देता है कि प्रत्येक बच्चे को जीवित रहने, सुरक्षा, विकास और भागीदारी का अधिकार है। ऐसे कानूनी ढांचे के बावजूद, भारत सहित कई देशों में बच्चों के अधिकारों से संबंधित कई कानूनी मुद्दे मौजूद हैं।

प्रमुख कानूनी चिंताओं में से एक बाल श्रम है। यद्यपि कानून खतरनाक उद्योगों में बच्चों को रोजगार देने से रोकते हैं, फिर भी कई बच्चे कारखानों, खेतों, घरेलू कार्यों और छोटे व्यवसायों में काम करते हैं। गरीबी, शिक्षा की कमी और कानूनों का कमजोर प्रवर्तन इस समस्या में योगदान देता है। भारत में बाल श्रम (निषेध और विनियमन) अधिनियम का उद्देश्य बच्चों के शोषण को रोकना है, फिर भी ग्रामीण और अनौपचारिक क्षेत्रों में इसका कार्यान्वयन एक चुनौती बनी हुई है।

एक अन्य गंभीर मुद्दा बाल दुर्व्यवहार और शोषण है। बच्चे घर, स्कूल या कार्यस्थल पर शारीरिक, भावनात्मक या यौन दुर्व्यवहार का शिकार हो सकते हैं। इससे निपटने के लिए, भारत ने यौन अपराधों से बच्चों की सुरक्षा अधिनियम लागू किया, जिसे आमतौर पर POCSO के नाम से जाना जाता है। यह कानून बच्चों के खिलाफ यौन अपराधों के लिए सख्त सजा प्रदान करता है और त्वरित परीक्षण के लिए विशेष अदालतें स्थापित करता है। हालांकि, सामाजिक कलंक, जागरूकता की कमी और कानूनी प्रक्रियाओं में देरी अक्सर पीड़ितों को समय पर न्याय प्राप्त करने से रोकती है।

बाल विवाह एक और गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है। कानूनी प्रतिबंधों के बावजूद, परंपरा, गरीबी और लैंगिक भेदभाव के कारण कुछ समुदायों में शीघ्र विवाह जारी है। बाल विवाह निषेध अधिनियम में लड़कियों के लिए कानूनी विवाह की आयु 18 वर्ष तथा लड़कों के लिए 21 वर्ष निर्धारित की गई है तथा बाल विवाह में शामिल लोगों को दंडित किया गया है। फिर भी दूरदराज के क्षेत्रों में प्रवर्तन कठिन है, जहां सामाजिक रीति-रिवाज कभी-कभी कानूनी मानदंडों को ओवरराइड कर देते हैं।

शिक्षा का अधिकार बच्चों के अधिकारों का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा बच्चों को सशक्त बनाती है और उन्हें शोषण और गरीबी से बचाती है। भारत में, निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा पर बच्चों का अधिकार अधिनियम 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा की गारंटी देता है। फिर भी, कई बच्चे आर्थिक कठिनाइयों, पारिवारिक जिम्मेदारियों या गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच की कमी के कारण स्कूल छोड़ देते हैं।

कानून के विरुद्ध संघर्ष करने वाले बच्चों को भी कानूनी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। किशोर न्याय प्रणाली का उद्देश्य युवा अपराधियों को दंडित करने के बजाय सुधार करना है। किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम उन बच्चों की देखभाल, सुरक्षा और पुनर्वास का प्रावधान करता है जो जरूरतमंद हैं या कानून के साथ संघर्ष कर रहे हैं।

हालाँकि, भीड़भाड़ वाली संस्थाएं, अपर्याप्त पुनर्वास कार्यक्रम और प्रशिक्षित पेशेवरों की कमी अक्सर इसकी प्रभावशीलता में बाधा डालती है।

निष्कर्षतः बच्चों के अधिकारों की रक्षा करना न केवल कानूनी जिम्मेदारी है बल्कि समाज का नैतिक दायित्व भी है। मजबूत कानून मौजूद हैं, लेकिन उनकी सफलता उचित प्रवर्तन, सार्वजनिक जागरूकता और सामुदायिक भागीदारी पर निर्भर करती है। सरकारों, परिवारों, स्कूलों और नागरिक समाज को यह सुनिश्चित करने के लिए एक साथ काम करना चाहिए कि प्रत्येक बच्चा शिक्षा, स्वास्थ्य और अवसरों तक पहुंच वाले सुरक्षित वातावरण में पले-बढ़े। तभी एक न्यायसंगत और बाल-अनुकूल समाज का दृष्टिकोण सही मायने में साकार हो सकेगा। डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाशास्त्री स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

प्रागैतिहासिक पौधे ऐसा पानी पैदा करते हैं जो ऐसा लगता है जैसे वह अंतरिक्ष से आया हो

डॉ विजय गर्ग

एक खोज जो विज्ञान कथा जैसी लगती है, वैज्ञानिकों ने पाया है कि आज भी पृथ्वी पर जीवित एक प्रागैतिहासिक पौधा उल्कापिंड में पाए जाने वाले रासायनिक हस्ताक्षर के समान पानी का उत्पादन कर सकता है। इस असाधारण खोज ने हमारे ग्रह के अतीत और ब्रह्मांड के रहस्यों को समझने में नए द्वार खोल दिए हैं। छिपे रहस्यों वाला एक जीवित जीवाश्म इस खोज के केंद्र में प्राचीन हॉर्सटेल (एक्विसेटम)— एक प्रजाति है जो 400 मिलियन वर्षों से अधिक समय से मौजूद है, जो डायनासोर से पहले के समय की बात है। यह सरल, खोखले तने वाला पौधा अक्सर नदियों और आर्द्रभूमि के पास पाया जाता है, तथा इसे लंबे समय से जीवित जीवाश्म माना जाता रहा है द टाइम्स ऑफ इंडिया +1 अपनी साधारण उपस्थिति के बावजूद, हॉर्सटेल ने अब एक उल्लेखनीय क्षमता का खुलासा किया है जिसने वैज्ञानिकों को आश्चर्यचकित कर दिया है। वाटर दैट लुक्स एलियन सी शोधकर्ताओं ने पाया कि हॉर्सटेल प्लांट से गुजरने वाला पानी एक असामान्य परिवर्तन से गुजरता है। जैसे-जैसे यह जड़ों से सिरे तक आगे बढ़ता है, इसकी ऑक्सीजन समस्थानिक संरचना नाटकीय रूप से बदल जाती है। इतना अधिक कि यह उल्कापिंड या अलौकिक पदार्थों में पाए जाने वाले पानी जैसा हो जाता है। भूविज्ञान पृष्ठ +1 इसका मतलब यह नहीं है कि पानी वास्तव में अंतरिक्ष से आता है। इसके बजाय, यह पौधा एक प्राकृतिक निस्पंदन प्रणाली की तरह कार्य करता है, तथा ऑक्सीजन समस्थानिकों के संतुलन को इस प्रकार बदलता है कि पृथ्वी पर ऐसा बहुत कम होता है। स्लोवेनिया फ्रैंकफर्ट 2025 नेचर्स माइक्रोस्कोपिक फ़िल्टरेशन सिस्टम वैज्ञानिकों का मानना है कि पौधे की आंतरिक संरचना इस घटना के लिए जिम्मेदार है। हॉर्सटेल के तने में छोटे-छोटे चैनल होते हैं जो पानी को ऊपर की ओर ले जाते हैं। इस प्रक्रिया के दौरान, हल्के और भारी ऑक्सीजन समस्थानिकों को अलग किया जाता है, ठीक वैसे ही जैसे एक अत्यधिक उन्नत प्राकृतिक फिल्टर होता है। स्लोवेनिया फ्रैंकफर्ट 2025 परिशुद्धता का यह स्तर इतना जटिल है कि शोधकर्ताओं का कहना है कि प्रयोगशालाओं में इसकी नकल करना अत्यंत कठिन होगा। पृथ्वी की प्राचीन जलवायु को अनलॉक करना अपनी जिज्ञासा से परे, इस खोज का बड़ा वैज्ञानिक महत्व है। हॉर्सटेल के पानी में असामान्य समस्थानिक पैटर्न वैज्ञानिकों को पृथ्वी की प्राचीन जलवायु का पुनर्निर्माण करने में मदद कर सकते हैं, विशेष रूप से शुष्क क्षेत्रों में। भूविज्ञान पृष्ठ जीवित पौधों और जीवाश्म अवशेषों दोनों का अध्ययन करके, शोधकर्ता लाखों वर्ष पूर्व की आर्द्रता स्तर, वर्षा पैटर्न और वायुमंडलीय स्थितियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। भविष्य की प्रौद्योगिकी के लिए प्रेरणा यह प्रागैतिहासिक पौधा भविष्य के नवाचारों को भी प्रेरित कर सकता है। यह समझना कि हॉर्सटेल प्राकृतिक रूप से परमाणु स्तर पर पानी को किस प्रकार फिल्टर करता है, निम्नलिखित कारण हो सकते हैं उन्नत जल शोधन प्रणालियां ऊर्जा-कुशल निस्पंदन प्रौद्योगिकियां पर्यावरण परिवर्तन का अध्ययन करने के नए तरीके

पुरावनस्पति विज्ञान और चरम पौधों के शरीरविज्ञान के क्षेत्र में, कुछ ही चीजें ऐसी हैं जो विज्ञान कथा की तरह लगती हैं, जैसे कोई पौधा इतना शुद्ध या संरचनात्मक रूप से अद्वितीय पानी पैदा करता है कि वह अलौकिक प्रतीत होता है। जबकि पौधे वास्तव में गहरे अंतरिक्ष से पानी पैदा नहीं करते हैं, कुछ प्रागैतिहासिक वंशावलीएं (जिनमें से कई आधुनिक वंशज हैं) जैविक तंत्रों का उपयोग करती हैं जो उनके आंतरिक तरल पदार्थों को इस दुनिया से बाहर की तरह बना देती हैं। द सीक्रेट ऑफ गुटशन एंड ज़ाइलेम सैप विशाल घोड़े की पूंछ (एक्विसेटोप्सिडा) या प्रारंभिक फर्न जैसे प्राचीन पौधों से जुड़े अधिकांश ₹पानी₹ केवल H2O नहीं है; यह एक अत्यधिक फ़िल्टर किया गया, पोषक तत्वों से भरपूर कॉकटेल है जिसे ज़ाइलेम सैप के नाम से जाना जाता है। कार्बोनिफेरस काल के दौरान, पृथ्वी उच्च आर्द्रता वाला ग्रीनहाउस था। इन वातावरणों में, पौधे अक्सर आंतों को नष्ट करने में लगे रहते हैं। जब मिट्टी बहुत नम होती है और हवा नम होती है, तो पौधे अपनी पत्तियों के माध्यम से पानी को आसानी से वाष्पित नहीं कर पाते (पसीना)। इसके बजाय, वे हाइडैथोड्स नामक विशेष छिद्रों से अतिरिक्त पानी को बाहर निकालने के लिए जड़ दबाव का उपयोग करते हैं। यह ₹अंतरिक्ष से₹ क्यों दिखता है इस जल की दृश्य ₹अन्यविश्वता₹ आमतौर पर तीन कारकों पर निर्भर करती है अत्यधिक शुद्धताः प्राचीन काई और फर्न प्राकृतिक आसवन के रूप में कार्य करते हैं। आंतों के माध्यम से बाहर निकाले जाने वाले पानी में अक्सर अधिकांश खनिज समाप्त हो जाते हैं, लेकिन इसमें विशिष्ट शर्करा और प्रोटीन शामिल हो सकते हैं, जो इसे निश्चित प्रकाश के तहत क्रिस्टल जैसी, लगभग चमकदार स्पष्टता प्रदान करते हैं। संरचनात्मक चिपचिपाहटः कुछ प्रागैतिहासिक प्रजातियों में, तरल पदार्थ में म्यूसिलेज—एक मोटा, गोंद जैसा पदार्थ होता है। इससे पानी को ₹पारा-जैसा₹ सतह तनाव मिलता है, जिससे बूंदें तरल चांदी के तैरते हुए गोलों की तरह दिखती हैं। ₹नीला₹ रंगः कुछ विशेष पौधों के स्राव वर्णक के बजाय संरचनात्मक रंग के माध्यम से प्रकाश के साथ अंतःक्रिया करते हैं, कभी-कभी तरल को एक फीका, इंद्रधनुषी नीला या बैंगनी चमक देता है, जो हम नेबुले में कल्पना करते हैं। आधुनिक ₹समय यात्री₹ः इक्विसेटम आज हमारे पास प्रागैतिहासिक जल उत्पादक के सबसे करीब इक्विसेटम (हॉर्सटेल) है। यह पौधा 300 मिलियन वर्षों से भी अधिक समय तक अपरिवर्तित रहा है। सिलिका सामग्रीः ये पौधे पृथ्वी से बड़ी मात्रा में सिलिका अवशोषित कर लेते हैं। परिणामः उनके द्वारा संसाधित जल को अक्सर सिलिका-समृद्ध ऊतकों के माध्यम से अत्यधिक छान लिया जाता है, तथा स्टेम पर मोती लगाने से पहले यह प्रभावी रूप से ₹कांच₹ फिल्टर से होकर गुजरता है। निष्कर्ष यह खोज सरल है

वे जिस पानी का प्रसंस्करण करते हैं, उसे अक्सर सिलिका-समृद्ध ऊतकों के माध्यम से बहुत अधिक छान लिया जाता है, तथा स्टेम पर मोती लगाने से पहले प्रभावी रूप से ₹कांच₹ फिल्टर से होकर गुजरता है। निष्कर्ष यह खोज कि एक साधारण प्रागैतिहासिक पौधा अंतरिक्ष जैसा जल उत्पादन कर सकता है, हमें याद दिलाती है कि प्रकृति में अभी भी कई रहस्य छिपे हुए हैं। पृथ्वी के सुदूर अतीत से बचे हॉर्सटेल अब वैज्ञानिकों को हमारे ग्रह के इतिहास और ब्रह्मांड की रसायन विज्ञान दोनों का पता लगाने में मदद कर रहे हैं। कभी-कभी, सबसे असाधारण खोजें दूर की आकाशगंगाओं में नहीं मिलती हैं, बल्कि पृथ्वी पर एक धारा के पास चुपचाप बढ़ती होती हैं।

भारत की शक्ति और हर वैश्विक साझेदारी का भविष्य- लोकतंत्र, जनसांख्यिकी और स्किल्ड वर्कफोर्स का संगम

भारत की शक्ति और वैश्विक परिदृश्य-लोकतंत्र, जनसांख्यिकी और स्किल्ड वर्कफोर्स की ताक़त हैँ वैश्विक कंपनियाँ भारत में निवेश करती हैं तो उन्हें स्थिर राजनीतिक माहौल, विशाल उपभोक्ता आधार और प्रतिभाशाली मानव संसाधन तीनों एक साथ मिलते हैं- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत आज केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं है, बल्कि यह विश्व के लिए आशा, स्थिरता और अवसरों का केंद्र बन चुका है। भारत आज जिस मुकाम पर खड़ा है, उसे केवल एक राष्ट्र की उपलब्धि कहना कम होगा। यह 21वीं सदी के उस नए युग की शुरुआत है यह स्वतंत्रता के 75 से अधिक वर्षों की यात्रा में भारत ने बार-बार यह सिद्ध किया है कि, लोकतंत्र केवल एक शासन पद्धति नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र की आत्मा है। इसके साथ ही, भारत की जनसांख्यिकी और विशाल स्किल्ड वर्कफोर्स ने उसे ऐसे मुकाम पर ला खड़ा किया है, जहां से वह न केवल अपने नागरिकों के भविष्य को संवार सकता है, बल्कि पूरे विश्व के विकास की दिशा भी तय कर सकता है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र से, यह लेख तीन मुख्यस्तंभों, लोकतंत्र की शक्ति, जनसांख्यिकीय लाभ और स्किल्ड वर्कफोर्स की क्षमता पर आधारित है, जिनकी वजह से भारत और उसके वैश्विक साझेदारों के बीच हर रिश्ते को ₹विन-विन सिचुएशन₹ के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

साथियों बात अगर हम भारत की पहली सबसे बड़ी ताकत की करें तो, भारत दुनियाँ का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। 1950 में संविधान लागू होने के बाद से आज तक भारत ने चुनावों के जरिए सत्ता परिवर्तन, नीति निर्माण और नागरिक अधिकारों को जिस मजबूती से कायम रखा है, वह विश्व के लिए उदाहरण है। लोकतंत्र का अर्थ केवल सत्ता परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नागरिक भागीदारी, न्याय व्यवस्था की स्वतंत्रता और पारदर्शी शासन की नींव पर खड़ा है। विविधता में एकता इसका सबसे बड़ा परिचायक है, जहां 22 आधिकारिक भाषाएँ, हजारों बोलियाँ, सैकड़ों धर्म-संप्रदाय और अलग-अलग संस्कृतियाँ होने के बावजूद लोग लोकतांत्रिक रूप से एकजुट रहते हैं। भारत का लोकतंत्र वैश्विक कंपनियों के लिए एक सुरक्षित वातावरण प्रदान करता है क्योंकि वे जानती हैं कि यहां नीतियाँ पारदर्शी हैं, कानून का शासन है और निवेशकों के हितों की रक्षा की जाती है। दुनिया के कई हिस्सों में अधिनायकवाद और राजनीतिक अस्थिरता देखने को मिलती है। अफ्रीकी और एशियाई देशों में सत्ता परिवर्तन अक्सर हिंसा और अराजकता का कारण बनते हैं। इसके विपरीत भारत ने अपने लोकतांत्रिक ढांचे से स्थिरता का माहौल तैयार किया है। यही कारण है कि विश्व की बड़ी कंपनियाँ भारत को ₹सेफ़ हैवन₹ के रूप में देखती हैं। चीन या रूस जैसे देशों में निवेश करने पर राजनीतिक जोखिम अधिक होता है, जबकि भारत में लोकतंत्र यह सुनिश्चित करता है कि नीतियाँ स्थिर रहें और निवेश सुरक्षित रहे। यह लोकतंत्र की वही शक्ति है जो भारत को अलग पहचान दिलाती है।

साथियों बात अगर हम भारत की दूसरी सबसे बड़ी ताक़त की करें तो वह है उसकी जनसांख्यिकी। वर्तमान समय में भारत की आबादी लगभग 1.43 अरब है और इसमें से 65 पेर्सेंट से अधिक लोग 35 वर्ष से कम आयु वर्ग में आते हैं। यह स्थिति भारत को दुनियाँ की सबसे युवा आबादी वाला देश बनाती है। युवा आबादी किसी भी राष्ट्र के लिए ऊर्जा, नवाचार और विकास का प्रतीक होती है। जब यूरोप और जापान जैसे विकसित देश बूढ़ी होती आबादी की समस्या से जूझ रहे हैं, तब भारत के पास एक ऐसा डेमोग्राफिक एडवांटेज है जो उसे वैश्विक अर्थव्यवस्था का इंजन बना सकता है। भारत की युवा पीढ़ी तकनीक अपनाने में सबसे आगे है। वे न केवल नई तकनीकों को अपनाते हैं बल्कि स्टार्टअप्स और उद्यमिता की ओर भी बढ़ रहे हैं। यही कारण है कि भारत आज दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन चुका है। ₹मेक इन इंडिया₹, ₹स्टार्टअप इंडिया₹ और ₹डिजिटल इंडिया₹ जैसी योजनाएँ इसी युवा ऊर्जा का परिणाम हैं। यह डेमोग्राफिक डिविडेंड भारत को न केवल घरेलू विकास की दिशा में मजबूत बना रहा है बल्कि विश्व के लिए भी अवसर पैदा कर रहा है। भारत की यह जनसांख्यिकी वैश्विक स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। भारत हर साल लाखों इंजीनियर, डॉक्टर और मैनेजमेंट प्रोफेशनल तैयार करता है। यह वर्कफोर्स पूरी दुनिया की ज़रूरतें पूरी करता है। भारतीय पेशेवर आज अमेरिका, यूरोप, खाड़ी देशों और अफ्रीका तक अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। यह युवा आबादी उपभोक्ता बाजार के रूप में भी बेहद आकर्षक है। युवा वर्ग नई तकनीकों, डिजिटल सेवाओं और उपभोक्ता उत्पादों का सबसे बड़ा खरीदार है। यही कारण है कि वैश्विक कंपनियाँ भारत को भविष्य का सबसे बड़ा बाजार मानती हैं।

साथियों बात अगर हम भारत की तीसरी और सबसे महत्वपूर्ण शक्ति की करें तो वह है उसका विशाल स्किल्ड वर्कफोर्स। भारत के पास आज दुनिया का सबसे बड़ा स्किल्ड ह्यूमन रिसोर्स पूल है। आईटी, हेल्थकेयर, इंजीनियरिंग, रिसर्च, शिक्षा और मैन्युफैक्चरिंग जैसे क्षेत्रों में भारतीयों ने अपनी प्रतिभा से पूरी दुनिया में पहचान बनाई है। बेंगलुरु, हैदराबाद और पुणे जैसे शहर वैश्विक आईटी हब के रूप में उभर चुके हैं। भारतीय आईटी प्रोफेशनल्स अमेरिकी सिलिकॉन वैली की कंपनियों के लिए रीढ़ की हड्डी बन चुके हैं। हेल्थकेयर के क्षेत्र में भारतीय डॉक्टर और नर्स पूरी दुनिया में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान यह साफ दिखाई दिया कि भारतीय मेडिकल प्रोफेशनल्स की क्षमता कितनी विशाल है। मैन्युफैक्चरिंग और स्टार्टअप्स के क्षेत्र में भी भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। ₹मेक इन इंडिया₹ अभियान ने विदेशी निवेशकों को आकर्षित किया है और भारत में उत्पादन का माहौल तैयार किया है। भारत का स्टार्टअप इकोसिस्टम भी दुनिया में तीसरे स्थान पर है, जिसने लाखों रोजगार पैदा किए हैं। यह स्किल्ड वर्कफोर्स केवल भारत की अर्थव्यवस्था के लिए ही नहीं, बल्कि वैश्विक नवाचार और विकास के लिए भी अहम है।

साथियों बातें कर हम इन तीनों कारकों, लोकतंत्र, जनसांख्यिकी और स्किल्ड वर्कफोर्स, का संगम भारत को विश्व की बड़ी कंपनियों और सरकारों के लिए आकर्षण का केंद्र बनाने की करें तो, जब कंपनियाँ भारत में निवेश करती हैं तो उन्हें स्थिर राजनीतिक माहौल, विशाल उपभोक्ता आधार और प्रतिभाशाली मानव संसाधन तीनों एक साथ मिलते हैं। यही कारण है कि एप्पल, गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, अमेज़न और टेस्ला जैसी कंपनियाँ भारत को भविष्य का हब मान रही हैं। भारत और उसके वैश्विक साझेदारों के बीच संबंध केवल व्यापार तक सीमित नहीं हैं। यह संबंध वास्तव में परस्पर लाभकारी है। भारत को रोजगार, तकनीक और निवेश मिलता है, जबकि कंपनियों को लागत में कमी, स्थिर वातावरण और विशाल बाजार तक पहुंच मिलती है। इस प्रकार यह रिश्ता ₹विन-विन सिचुएशन₹ का प्रतीक बन जाता है। हालांकि भारत के सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं। शिक्षा और कौशल में असमानता, आधारभूत ढाँचे की कमी, गरीबी और बेरोजगारी जैसी समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं। लेकिन भारत सरकार ₹स्किल इंडिया₹, ₹डिजिटल इंडिया₹, ₹गति शक्ति योजना₹ और ₹आत्मनिर्भर भारत₹ जैसे अभियानों से इन चुनौतियों को अवसरों में बदलने का प्रयास कर रही है। यदि ये प्रयास सफल होते हैं तो भारत अपनी जनसांख्यिकी और स्किल्ड वर्कफोर्स का पूरा लाभ उठा सकेगा।

अंततः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि यह स्पष्ट है कि भारत की शक्ति तीन स्तंभों पर आधारित है, लोकतंत्र, जनसांख्यिकी और स्किल्ड वर्कफोर्स। ये तीनों मिलकर भारत को न केवल विश्व की आर्थिक महाशक्ति बना रहे हैं, बल्कि इसे एक भरोसेमंद वैश्विक साझेदार भी बना रहे हैं। भारत का विकास मॉडल शून्य-योग नहीं है, बल्कि यह पूरे विश्व के लिए अवसर पैदा करता है। आने वाले दशकों में जब दुनिया नए संकटों और अवसरों से गुज़रेगी, तब भारत अपनी लोकतांत्रिक ताक़त, युवा ऊर्जा और स्किल्ड वर्कफोर्स के दम पर पूरे विश्व के लिए आशा और सहयोग का केंद्र बना रहेगा। यही भारत की असली पहचान है-एक ऐसा राष्ट्र जो अपने विकास के साथ-साथ पूरे विश्व की प्रगति में योगदान देता है और हर वैश्विक साझेदारी को वास्तविक ₹विन-विनर₹ बनाता है।

डिग्री तो मिली, लेकिन आज़ादी नहीं – युवा डिजिटल दास

आज की युवा पीढ़ी के लिए डिजिटल आज़ादी का सपना अब कठिन हकीकत बन चुका है। समुद्र तट पर काम करने, खुली हवा में लैपटॉप खोलकर पैसे कमाने और दुनिया घूमने की कल्पना अब छोटे-छोटे फ्लैट, बिजली कटौती और लगातार काम के दबाव में उलझकर रह गई है। हर सुबह उठते ही नए प्रस्ताव भेजने की चिंता और कमाई की अनिश्चितता उनके दिन की शुरुआत बन जाती है, और रात खत्म होती है रिजेक्शन और अधूरी उम्मीदों की चिंता में। घंटों मेहनत के बावजूद केवल न्यूनतम मजदूरी मिलती है, और सोशल मीडिया की चमक-दमक से वास्तविकता का अंतर और गहरा दिखता है। यह कोई डिजिटल नोमैड की स्वप्निल दुनिया नहीं, बल्कि 'डिजिटल भिखारी' बनने की कठोर हकीकत है।

डिजिटल दुनिया अक्सर धोखा देती है। समुद्र तट पर काम, कॉफी के साथ लैपटॉप, और योग करते हुए मीटिंग – यह केवल स्क्रीन पर दिखती झलक है। भारतीय युवा इसे देखकर सोचते हैं कि बस इंटरनेट और लैपटॉप चाहिए, बाकी सब आसान होगा। असलियत अलग है। भारत में गिग इकोनॉमी का जाल इतना जटिल है कि स्थिर कमाई और सुरक्षा मुश्किल है। इकोनॉमिक सर्वे २०२५-२६ के अनुसार गिग वर्कर्स की संख्या २०२१ में 7.7 लाख थी, जो २०२५ तक 1.२ करोड़ तक बढ़ गई। करीब 40% की मासिक कमाई 15,000 रुपये से कम है। विदेशी क्लाइंट उन्हें सस्ता विकल्प मानते हैं। यह स्वतंत्रता नहीं, बल्कि नई गुलामी है – मेहनत ज्यादा, कमाई कम, सुरक्षा शून्य। नौकरी के अवसरों की कमी और एआई के बढ़ते दबाव ने युवा पीढ़ी को फ्रीलांसिंग की ओर धकेल दिया है। स्टार्टअप बंद हो रहे हैं, नियमित रोजगार सिकुड़ रहे हैं, और घर बैठे विदेशी मुद्रा कमाने का सपना आकर्षक बन गया है। लेकिन गिग इकोनॉमी में शुरुआत ही कठिन है। लाखों फ्रीलांसर एक ही प्रोजेक्ट के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। औसतन भारतीय फ्रीलांसर 10-15 डॉलर प्रति घंटा चार्ज करते हैं, जबकि वैश्विक औसत 40 डॉलर से अधिक है। खुद को सस्ता साबित करना उनकी दिनचर्या बन गई है। हर भेजा गया प्रपोजल गुहार की तरह और हर रिजेक्शन चोट की तरह महसूस होता है। यही वह शुरुआत है, जो उन्हें 'डिजिटल भिखारी' बनाती है – जहां क्लाइंट राजा और युवा पूरी तरह उसकी दया पर निर्भर होता है।

दिन-रात की मेहनत के बावजूद युवा केवल अधूरी सफलता पाते हैं। रात के ३ बजे क्लाइंट के संदेशों का जवाब देना, अनगिनत संशोधन मुफ्त में करना, और फिर भी पेमेंट में देरी का सामना करना उनकी सामान्य दिनचर्या बन गई है। प्लेटफॉर्म फीस और टैक्स का बोझ लगातार बढ़ता है, जबकि स्वास्थ्य बीमा, पेंशन या छुट्टी जैसी सुरक्षा का कोई विकल्प नहीं है। अमेरिकी फ्रीलांसरों की तुलना में भारतीय चार गुना कम दर पर काम करते हैं। महीनों की मेहनत के बाद भी बचत नगण्य रहती है। ईएमआई, किराया और रोजमर्रा के बिलों का दबाव लगातार बना रहता है। गिग इकोनॉमी उन्हें बांधती है, लेकिन सुरक्षा नहीं देती। सपना बड़ा, हकीकत कड़वी। मानसिक दबाव अब स्पष्ट हो चुका है। डिजिटल भिखारी दिन-रात स्क्रीन से चिपके रहते हैं। अलग टाइम जोन की वजह से नींद गायब हो जाती है। लगातार रिजेक्शन और आर्थिक अनिश्चितता डर और बर्नआउट पैदा कर रही हैं। महिलाएं दोहरी जिम्मेदारी झेल रही हैं – घर और गिग दोनों का बोझ। कोई साथ नहीं, कोई यूनियन नहीं। पारंपरिक भिखारी सड़क पर खुलकर मांगते हैं, लेकिन डिजिटल भिखारी अकेले कमरे में टूटता है। युवा पीढ़ी, जो देश का भविष्य थी, अब प्लेटफॉर्म एल्गोरिदम की कैद में है। निराशा बढ़ रही है, आत्मविश्वास घट रहा है। कमजोर व्यवस्था समस्या को और गहरा कर रही है। शिक्षा केवल डिग्री देती है, स्किल्स नहीं। गिग इकोनॉमी को बढ़ावा तो दिया जा रहा है, लेकिन मजबूत कानून नहीं हैं। श्रमिकों को 'स्वतंत्र ठेकेदार' घोषित करके उनके अधिकार छीने जा रहे हैं। बेरोजगारी के दबाव में युवा इस राह पर आते हैं, लेकिन सुरक्षा शून्य रहती है। अनुमान है कि २०२९-३० तक गिग वर्कर्स २.३५ करोड़ तक पहुंच जाएंगे। अधिकांश कम वेतन, अनिश्चितता और थकान में जीवन यापन कर रहे होंगे। विदेशी क्लाइंट्स की दया पर निर्भरता बढ़ रही है, देश और जमीन से कनेक्शन कमजोर हो रहा है। अब बदलाव का समय है। युवा समझें कि डिजिटल भिखारी बनने का कोई रास्ता नहीं है। स्किल्स में निवेश करें – एआई, विशेष क्षेत्रों और लोकल नेटवर्किंग। स्थिर करियर या वास्तविक उद्यमिता चुनें, जहां सम्मान और सुरक्षा हो। सरकार को गिग वर्कर्स के लिए मजबूत सुरक्षा कानून बनाना चाहिए। सोशल मीडिया की झूठी चमक छोड़ें और हकीकत देखें। सच्ची आज़ादी स्किल और आत्मनिर्भरता से आती है, भीख से नहीं। यदि युवा एकजुट होकर अपनी कीमत तय करें, तो यह दौर बदला जा सकता है।

युवा पीढ़ी के लिए यह अंतिम चेतावनी है। डिजिटल नोमैड बनने का सपना देखने वाले आज 'डिजिटल भिखारी' बन चुके हैं, जहां उनकी मेहनत, समय और उम्मीदें पूरी तरह दूसरों की दया पर निर्भर हैं। परिवर्तन का सामर्थ्य उनके हाथ में है, लेकिन जागरूकता जरूरी है। अगर आज सचेत नहीं हुए, तो आने वाला कल पूरी युवा पीढ़ी के लिए आर्थिक शोषण और मानसिक दबाव लेकर आएगा। असली स्वतंत्रता केवल कमाई में नहीं, बल्कि आत्म-सम्मान, गरिमा और अपने फैसले लेने की शक्ति में है। उठो युवा, अपनी योग्यता और मूल्य पहचानो – क्योंकि भीख मांगते हुए कोई सच्चा नोमैड या असली स्वतंत्र व्यक्ति कभी नहीं बन सकता।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

"विश्व डाउन सिंड्रोम दिवस" हमें यह सिखाता है कि हर जीवन अनमोल है - डॉ रुप कुमार बनर्जी

गोरखपुर। हर वर्ष 21 मार्च हमें एक गहन सच्चाई से परिचित कराता है। यह केवल एक तिथि नहीं, बल्कि संवेदनशीलता, समझ और समावेश का प्रतीक है। "विश्व डाउन सिंड्रोम दिवस" हमें यह सिखाता है कि हर जीवन अनमोल है—चाहे वह सामान्य हो या विशेष। डाउन सिंड्रोम एक आनुवंशिक अवस्था है, जिसमें बच्चे के शरीर में 21वें क्रोमोसोम की एक अतिरिक्त प्रति होती है। इसी कारण इसे "ट्राइसोमी 21" भी कहा जाता है। यह कोई रोग नहीं, बल्कि एक विशेष जैविक भिन्नता है, जो शारीरिक और मानसिक विकास को कुछ हद तक धीमा कर सकती है।

ऐसे बच्चों में कुछ शारीरिक विशेषताएँ दिखाई दे सकती हैं, जैसे गोल चेहरा, छोटी आँखें और धीमी वृद्धि। लेकिन इन सबसे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है उनका निर्मल हृदय, स्नेह और सहजता। ये बच्चे अक्सर अत्यंत प्रेमपूर्ण, धैर्यवान और भावनात्मक रूप से समृद्ध होते हैं।

समाज को यह समझना चाहिए कि यह "असामान्यता" नहीं, बल्कि एक "विशिष्ट पहचान" है।

डाउन सिंड्रोम से ग्रसित बच्चों को कुछ स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जैसे हृदय से जुड़ी समस्याएँ, थायरॉयड असंतुलन या कमजोर रोग-प्रतिरोधक क्षमता। इसलिए नियमित स्वास्थ्य जांच, संतुलित एवं पौष्टिक आहार, हल्का योग एवं शारीरिक गतिविधि, तथा विशेष शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से उनके मानसिक विकास को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है।

होम्योपैथिक दृष्टिकोण:- होम्योपैथी में प्रत्येक व्यक्ति का उपचार उसकी संपूर्ण प्रकृति, शारीरिक और मानसिक विकास को ध्यान में रखकर किया जाता है। यही सिद्धांत डाउन सिंड्रोम पर भी लागू होता है। यह चिकित्सा पद्धति शरीर की आंतरिक जीवन शक्ति को सशक्त बनाने, रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और समग्र विकास को प्रोत्साहित करने पर केंद्रित होती है। साथ ही, यह व्यवहार और भावनात्मक संतुलन में सुधार लाने में भी सहायक हो सकती है।

समाज की भूमिका:- स्वीकार्यता ही सबसे बड़ा उपचार है। डाउन सिंड्रोम से जुड़ी सबसे बड़ी चुनौती शारीरिक नहीं, बल्कि सामाजिक है। हमें इन बच्चों के प्रति सहानुभूति नहीं, बल्कि सम्मान का भाव रखना चाहिए। हमें उनके साथ चलना है, उन्हें अलग नहीं करना है, और उन्हें शिक्षा एवं रोजगार के समान अवसर प्रदान करने हैं।

ये बच्चे हमें सरलता से जीने की सच्ची कला सिखाते हैं। उनकी मुस्कान में कोई छल नहीं होता, सिर्फ सच्चाई और प्रेम होता है।

गानों के बहाने गिरता स्तर या समाज का आईना?

- डॉ. सत्यवान सौरभ

आज के दौर में संगीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि वह समाज की सोच, दिशा और संस्कारों को प्रभावित करने वाली एक सशक्त शक्ति बन चुका है। मोबाइल फोन, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने संगीत की पहुँच को इतना व्यापक बना दिया है कि कोई भी गीत कुछ ही घंटों में करोड़ों लोगों तक पहुँच सकता है। ऐसे में गानों के बोल, उनकी प्रस्तुति और उनके पीछे छिपे संदेश का प्रभाव भी पहले की तुलना में कहीं अधिक गहरा और व्यापक हो गया है।

लेकिन हाल के समय में कुछ गानों की भाषा, उनके संकेत और उनकी दृश्यात्मकता जिस दिशा में बढ़ रही है, वह एक गंभीर चिंता का विषय बनती जा रही है। शब्दों के चयन में बढ़ती अशालीनता, दोहरे अर्थों वाले वाक्य और भड़काऊ प्रस्तुतियाँ—ये सब मिलकर यह प्रश्न खड़ा करते हैं कि क्या हम मनोरंजन के नाम पर अपनी सांस्कृतिक मर्यादाओं को धीरे-धीरे समाप्त कर रहे हैं? या फिर यह केवल समय के साथ बदलती अभिव्यक्ति की शैली है, जिसे हमें स्वीकार करना चाहिए?

अक्सर ऐसे मुद्दों पर सबसे पहले उंगली सेंसर व्यवस्था पर उठती है, विशेष रूप से Central Board of Film Certification (सीबीएफसी) पर। लेकिन यह समझना आवश्यक है कि सेंसर बोर्ड की भूमिका सीमित और परिभाषित है। वह मुख्यतः फिल्मों को प्रमाणित करने का कार्य करता है। आज के डिजिटल युग में अधिकांश गाने सीधे यूट्यूब, ओटीटी प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया के माध्यम से दर्शकों तक पहुँचते हैं, जहाँ पारंपरिक सेंसरशिप की पकड़ लगभग समाप्त हो चुकी है। ऐसे में सेंसर बोर्ड को हर समस्या का जिम्मेदार ठहराना न तो न्यायसंगत है और न ही व्यावहारिक।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि डबल मीनिंग या इशारों में बात कहने की परंपरा भारतीय सिनेमा में नई नहीं है। पुराने दौर के गीतों में भी रूपकों और प्रतीकों का प्रयोग होता था, लेकिन उनमें एक सादगी, एक सौंदर्य और एक मर्यादा होती थी। वे भावों को व्यक्त करते थे, उत्तेजना को नहीं उभारते थे। आज स्थिति यह है कि संकेत इतने स्पष्ट और प्रत्यक्ष हो गए हैं कि वे कल्पना की गुंजाइश कम और भौंडेपन की संभावना अधिक पैदा करते हैं। यह बदलाव केवल तकनीकी नहीं, बल्कि मानसिकता का भी द्योतक है।

यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह भी है कि इस बदलाव के लिए जिम्मेदार कौन है? क्या केवल फिल्म निर्माता, गीतकार और कलाकार ही इसके लिए दोषी हैं? या फिर दर्शक भी इस प्रक्रिया में बराबर के भागीदार हैं? सच तो यह है कि बाजार उसी दिशा में चलता है, जहाँ मांग होती है। जब कोई गीत अपने विवादित या उत्तेजक बोलों के बावजूद करोड़ों बार देखा और सुना जाता है, तो यह केवल निर्माता की रणनीति नहीं, बल्कि दर्शकों की पसंद का भी परिणाम होता है। हम जिस प्रकार के कंटेंट को देखते, सुनते और साझा करते हैं, वही धीरे-धीरे मुख्यधारा बन जाता है।

आज का दर्शक केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि कंटेंट का निर्माता और प्रचारक भी है। सोशल मीडिया पर कोई भी व्यक्ति किसी गीत को वायरल कर सकता है। ऐसे में जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। यदि हम सच में बेहतर और सार्थक संगीत चाहते हैं, तो हमें अपनी पसंद और प्राथमिकताओं में बदलाव लाना होगा। केवल आलोचना करने से स्थिति नहीं बदलेगी, बल्कि सकारात्मक विकल्पों को समर्थन देना भी आवश्यक है।

सबसे अधिक चिंता का विषय यह है कि इस प्रकार के गानों का प्रभाव बच्चों और युवाओं पर पड़ता है। वे बिना किसी समझ के इन गीतों को गुनगुनाते हैं, उनके शब्दों को दोहराते हैं और अनजाने में ही उन भावों को आत्मसात करने लगते हैं। बचपन और किशोरावस्था वह अवस्था होती है, जहाँ व्यक्ति का मानसिक और नैतिक विकास हो रहा होता है। ऐसे में यदि उनके सामने बार-बार भड़काऊ और भ्रमित करने वाली सामग्री प्रस्तुत की जाती है, तो उसका प्रभाव दीर्घकालिक हो सकता है।

यहाँ यौन शिक्षा के प्रश्न को भी समझना आवश्यक है। यौन शिक्षा एक अत्यंत महत्वपूर्ण और संवेदनशील विषय है, जिसे वैज्ञानिक, सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से समझाया जाना चाहिए। लेकिन जब यही विषय गानों के माध्यम से भ्रामक, अशालीन और मनोरंजन के रूप में प्रस्तुत होता है, तो वह शिक्षा नहीं, बल्कि विकृति और भ्रम पैदा करता है। इससे न केवल विषय की गंभीरता कम होती है, बल्कि समाज में गलत धारणाएँ भी पनपती हैं।

समाधान की बात करें तो यह स्पष्ट है कि केवल प्रतिबंध या सेंसरशिप इस समस्या का स्थायी हल नहीं है। इतिहास गवाह है कि अत्यधिक नियंत्रण अक्सर रचनात्मकता को सीमित करता है और वैकल्पिक रास्तों को जन्म देता है। आवश्यकता है संतुलन की—ऐसा संतुलन जहाँ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी बनी रहे और सामाजिक जिम्मेदारी भी निभाई जाए।

इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका जागरूकता की है। दर्शकों को यह समझना होगा कि वे क्या देख रहे हैं और उसका क्या प्रभाव हो सकता है। अभिभावकों को अपने बच्चों के साथ संवाद स्थापित करना होगा, उन्हें सही और गलत के बीच अंतर समझाना होगा। शिक्षण संस्थानों को भी इस विषय पर खुलकर और जिम्मेदारी के साथ चर्चा करनी चाहिए।

साथ ही, कलाकारों और निर्माताओं को भी अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को समझना होगा। कला केवल कमाई का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने का साधन भी है। यदि वे चाहें तो मनोरंजन के साथ-साथ सकारात्मक संदेश भी दे सकते हैं। कई ऐसे उदाहरण हैं, जहाँ गीतों और फिल्मों ने समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का कार्य किया है। आवश्यकता है उस दिशा में प्रयास करने की।

मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स की भूमिका भी यहाँ महत्वपूर्ण है। उन्हें केवल लोकप्रियता और मुनाफे के आधार पर कंटेंट को बढ़ावा देने के बजाय उसकी गुणवत्ता और सामाजिक प्रभाव पर भी ध्यान देना चाहिए। यदि वे चाहें तो बेहतर और सार्थक सामग्री को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

अंततः, सिनेमा और संगीत समाज का आईना होते हैं। वे वही दिखाते हैं, जो समाज में कहीं न कहीं मौजूद होता है। यदि इस आईने में हमें विकृति दिखाई दे रही है, तो इसका अर्थ यह भी है कि हमें अपने भीतर झाँकने की आवश्यकता है। केवल आईने को दोष देकर हम अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकते।

इसलिए यह समय केवल आलोचना करने का नहीं, बल्कि आत्ममंथन का है। हमें यह तय करना होगा कि हम किस प्रकार के समाज की कल्पना करते हैं और उस दिशा में अपने छोटे-छोटे निर्णयों के माध्यम से योगदान देना होगा। क्योंकि अंततः, समाज वही बनता है, जैसा उसका सामूहिक व्यवहार और सोच होती है।

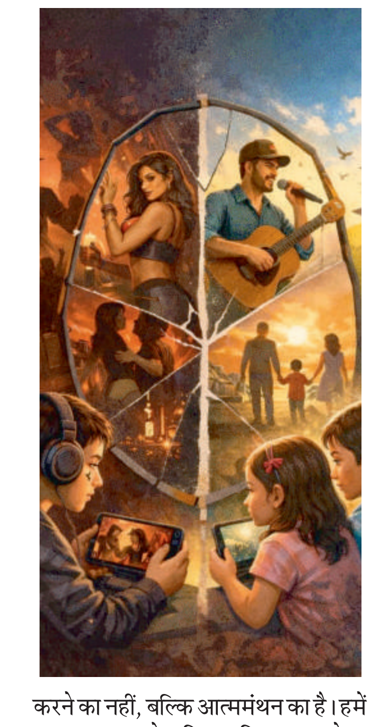

यदि हम सच में एक संवेदनशील, जागरूक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध समाज चाहते हैं, तो हमें अपने मनोरंजन के साधनों और उनकी दिशा पर भी उतना ही ध्यान देना होगा। वरना वह दिन दूर नहीं, जब मनोरंजन के नाम पर परोसी जा रही सामग्री हमारे ही मूल्यों को चुनौती देने लगेगी।

(डॉ. सत्यवान सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), एक कवि और सामाजिक विचारक है।)

संगम विश्वविद्यालय ने इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक के साथ किया महत्वपूर्ण एमओयू, उद्योग–शिक्षा सहयोग को मिलेगा नया आयाम

अनूप कुमार शर्मा परिवहन विशेष

भीलवाड़ा संगम विश्वविद्यालय ने उद्योग और शिक्षा के बीच मजबूत समन्वय स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक (IPPB) के साथ एक एमओयू (MoU) पर हस्ताक्षर किए हैं। यह समझौता विद्यार्थियों को आधुनिक बैंकिंग, फाइनेंस और डिजिटल पेमेंट्स सेक्टर की वास्तविक आवश्यकताओं से जोड़ने और उन्हें उद्योग के अनुरूप तैयार करने के उद्देश्य से किया गया है।

डॉ. अनुराग शर्मा ने बताया इस एमओयू का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न रखते हुए उन्हें व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना है, ताकि वे बैंकिंग और फाइनेंशियल सेक्टर की वास्तविक चुनौतियों को समझ सकें। इस साझेदारी के माध्यम से छात्रों को इंटरनशिप, लाइव प्रोजेक्ट्स, इंडस्ट्री एक्सपर्ट्स के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण, गेस्ट लेक्चर्स और स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम्स का लाभ मिलेगा। साथ ही, डिजिटल बैंकिंग और फाइनेंशियल इन्क्लूजन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त होगा, जिससे उनकी रोजगार क्षमता में वृद्धि होगी।

एमओयू हस्ताक्षर समारोह में IPPB से श्री प्रशांत शिंदे (AGM एवं सर्किल हेड – राजस्थान), संगम यूनिवर्सिटी से कुलपति महोदय प्रोफेसर करूणेश सक्सेना, प्रो-कुलपति प्रोफेसर मानस रंजन पाणिग्रही तथा रजिस्ट्रार डॉ. आलोक कुमार की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कुलपति महोदय प्रोफेसर करूणेश सक्सेना के अनुसार, यह सहयोग विद्यार्थियों को उद्योग की अपेक्षाओं के अनुरूप तैयार करने में सहायक सिद्ध होगा और उन्हें बेहतर करियर अवसर उपलब्ध कराएगा। प्रो-कुलपति प्रोफेसर मानस रंजन पाणिग्रही ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह एमओयू विश्वविद्यालय के अकादमिक ढांचे को और अधिक सशक्त बनाएगा तथा विद्यार्थियों को उद्योग की वास्तविक कार्यप्रणाली से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस प्रकार की साझेदारियाँ छात्रों के कौशल विकास के साथ-साथ उनके व्यावसायिक दृष्टिकोण को भी व्यापक बनाएंगी। रजिस्ट्रार डॉ. आलोक कुमार ने कहा कि इस सहयोग से विश्वविद्यालय में व्यावहारिक एवं उद्योग-आधारित शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने इसे एक महत्वपूर्ण कदम बताते हुए कहा कि इससे विद्यार्थियों को न केवल सीखने के नए अवसर मिलेंगे, बल्कि वे अपने करियर के लिए अधिक सक्षम और तैयार बन सकेंगे।

श्री शिंदे द्वारा स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज के विद्यार्थियों के लिए एक विस्तृत एवं ज्ञानवर्धक सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र के दौरान उन्होंने India Post Payments Bank की स्थापना, उद्देश्य तथा इसकी कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने विद्यार्थियों को बताया कि किस प्रकार IPPB देश के दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्रों तक बैंकिंग सेवाएँ पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। साथ ही, उन्होंने इसके विभिन्न सेवाओं जैसे डिजिटल बैंकिंग, डोरस्टेप बैंकिंग, आधार आधारित सेवाएँ तथा वित्तीय समावेशन की पहल के बारे में भी विस्तार से चर्चा की।

इस अवसर पर इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक की टीम, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज से डॉ. सुरभि बिरला, डॉ. नेहा सभरवाल एवं श्री किशन टाक तथा ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट से श्री अतुल पराशर उपस्थित रहे।

बूंदाबांदी ने बढ़ाई किसानों की चिंता

चौरीचौरा गोरखपुर। 20 मार्च शुक्रवार को दिन में धूप कमजोर नजर आए। जैसे जैसे दिन ढलता जा रहा था वैसे वैसे बादल और तेज हवाएं जोर पकड़ती जा रही थी। दोपहर बाद एकदम से बादल छा गए इसी के साथ तेज हवाएं भी और तेज हो गई। बादल छाए रहने और तेज हवाएं चलने की वजह से तापमान गिर गया तथा लोगों को गर्मी से राहत मिली। यही नहीं लगभग 3:00 बजे कहीं कहीं बूंदाबांदी भी हुई। बादल छाए रहने और तेज हवाएं चलने तथा जगह-जगह मौसम बिगड़ने की खबर पाकर किसान चिंतित नजर आए। क्योंकि गेहूं सरसों आदि की फसल अब तैयार होने को है और अगर मौसम बिगड़ जाता है या बिगड़ेगा तो इसका असर फसल पर पड़ेगा। फसलों को नुकसान पहुंचेगा। शुक्रवार की रात मौसम खराब हुआ और भोर तक बुंदाबांदी शुरू हो गई जो शनिवार की सुबह आठ बजे तक रुक रुक कर जारी रहीं। इस बुंदाबांदी से किसान चिंतित नजर आएं। गेहूं की फसल भी कहीं कहीं बूंदाबांदी और तेज हवाओं के कारण गिर गई है। सतीश, तेज प्रताप, संजीव, रमेश, बांकेलाल आदि किसानों ने बताया कि इतनी बारिश से अभी कुछ नुकसान नहीं पहुंचेगा फसलों का लेकिन इससे अधिक हो जाता तो नुकसान होता। किसानों ने कहा कि बारिश न हो इसी में सबकी भलाई है।

राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों ने सिखा एनसीसी परेड के गुण

गोरखपुर। जेबी महाजन डिग्री कॉलेज चौरी चौरा के राष्ट्रीय सेवा योजना के शिवाजी इकाई द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय शिविर के तृतीय दिन का प्रारंभ स्वयंसेवकों के द्वारा किए गए सामुदायिक कार्य से हुआ। इसके अंतर्गत स्वयंसेवकों ने शहीद स्मारक और इसके आसपास साफ सफाई का कार्य किया इसके उपरांत राष्ट्रीय कैडेट कोर गोरखपुर विश्वविद्यालय के वालंटियर करन ने राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों को एनसीसी परेड के गुण सिखाएं। स्वयं सेवको ने अभियान चलाकर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ विषय पर लोगों को जागरूक किया और राष्ट्रीय सेवा योजना की सेविका अनन्या ने महिलाओं को शिक्षित तथा आर्थिक रूप से मजबूत होने के विषय पर विशेष बल दिया। शिविर के तृतीय दिन बौद्धिक सत्र में जेबी महाजन डिग्री कॉलेज चौरी चौरा के समाजशास्त्र विभाग के सहायक आचार्य मनोज सिंह ने स्वयंसेवकों को "राष्ट्रीय सेवा योजना सद्भाव से सद्कर्म तक" विषय पर संबोधित किया।

आज मनाईं जाएगी चैत वासुदेव विनायक चतुर्थी

हिंदू धर्म में वासुदेव चतुर्थी का व्रत भगवान गणेश को समर्पित एक महत्वपूर्ण पर्व माना जाता है। यह व्रत चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को रखा जाता है। इसे चैत्र विनायक चतुर्थी और मनोरथ चतुर्थी के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन लोग विधि-विधान से गणेश जी की पूजा करते हैं और सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। चैत्र शुक्ल चतुर्थी तिथि शनिवार 21 मार्च को रात 11:56 बजे से शुरू होगी और 22 मार्च को रात 9:16 बजे तक रहेगी। सनातन परंपरा में उदया तिथि को महत्व दिया जाता है, इसलिए वासुदेव चतुर्थी का व्रत 22 मार्च को रखा जाएगा। इस दिन भगवान गणेश की पूजा विशेष फलदायी मानी जाती है। इस वर्ष वासुदेव चतुर्थी पर कई शुभ संयोग बन रहे हैं।

इस दिन रवि योग और भद्रावास योग का विशेष महत्व रहने वाला है। रवि योग रात 10:42 बजे तक प्रभावी रहेगा, जबकि भद्रावास योग सुबह 10:36 बजे से शुरू होकर रात 9:16 बजे तक रहेगा। इन योगों में भगवान गणेश की पूजा करना अत्यंत शुभ माना जाता है और इससे सकारात्मक फल प्राप्त हो सकते हैं।

पूजा विधि :- सर्वप्रथम प्रातःकाल स्नानोपरान्त शुद्ध वस्त्र धारण कर संकल्प लें। पूजन स्थल पर लकड़ी की चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर भगवान गणपति की मूर्ति स्थापित करें। दूर्वा, लड्डू, मोदक, सिन्दूर, शमीपत्र तथा सुपारी अर्पित करते हुये भगवान गणेश का षोडशोपचार पूजन करें। गणपति अथर्वशीर्ष, ऋणहर्ता गणेश स्तोत्र, सङ्कटनाशन गणेश स्तोत्र आदि का पाठ कर भगवान गणेश को प्रसन्न करें। व्रत की सफलता हेतु वासुदेव चतुर्थी व्रत कथा का श्रवण अथवा पाठ करें। मुद्गलपुराण के अनुसार पञ्चमी तिथि को ब्राह्मण के समक्ष विधिवत्व्रत का पारण करें।

संघ और अमरीका : जिन पे तकिया था, वही पत्ते हवा देने लगे!!

(आलेख : बादल सरोज)

न तो इन्होने शेक्सपीयर को पढने का झंझट पाला हैं, न इन्हें क्लियोपेट्रा के बारे में ही कुछ मालूम है, वरना ताजे अमरीकी कारनामे पर जुलियस सीजर के अंदाज में हैरत जताते हुए आहत भाव से इतना तो कहते ही कि 'हे ब्रूटस तुम भी'!! क्योंकि हाल के दौर में न जाने क्या-क्या सहने, करने और गगनचुम्बी चाटुकारिता की पातालगामी मिसालें कायम करने के बाद भी कमबख्त अमरीका ने सीधे मर्म पर चोट की है।

ट्रम्प की रहनुमाई वाली संघीय सरकार के धार्मिक स्वतन्त्रता पर अंतर्राष्ट्रीय आयोग -- यूएस कमीशन ओन इंटरनेशनल रिलीजियस फ्रीडम – ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ यानि आरएसएस को लोगों की धार्मिक स्वतन्त्रता के हनन और हिंसक कार्यवाहियों का जिम्मेदार मानते हुए इस पर प्रतिबन्ध लगाने, इससे जुड़े व्यक्तियों के अमरीका प्रवेश पर रोक लगाने तथा उनकी संपत्तियों को जब्त करने सहित 6 सिफारिशें की हैं। इसी मार्च में जारी इस रिपोर्ट में इस अमरीकी आयोग ने कई घटनाओं के उल्लेख के साथ भारत को चिंताजनक देशों की सूची में शामिल किया है और संयुक्त राज्य अमरीका की सरकार से कहा है कि वह भारत के साथ द्विपक्षीय संबंधों तथा व्यापार के रिश्तों को तय करते समय इन बातों को आधार बनाए। आयोग ने हथियारों की आपूर्ति रोकने की तक की बात कही है। इस रिपोर्ट में आरएसएस के साथ खुफिया एजेंसी रॉ का भी नाम है – जिसके पीछे कनाडा में लगे आरोप हो सकते हैं।

ऐसा पहली बार नहीं हुआ है, पिछले कुछ वर्षों से इस तरह के उल्लेख होते रहे हैं। इसी तरह की एक रिपोर्ट के आधार मौजूदा प्रधानमंत्री जब गुजरात के मुख्यमंत्री हुआ करते थे, तब उनको 'अवांछित व्यक्ति' घोषित कर उनके अमरीका प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगाया जा चुका है। इस तरह की रिपोर्ट्स को ऐन्वेई मानकर अनदेखा नहीं किया जा सकता, बाद में इन्ही को बहाने के रूप में इस्तेमाल किये जाने के ढेर उदाहरण मौजूद हैं।

वैसे अमरीका न तो दुनिया का दरोगा है, न सरपंच कि बाकी देशों को सर्टिफिकेट बांटता फिरे, मगर संघ और भाजपा के मामले में ऐसा इसलिए नहीं कहा जा सकता क्योंकि भारत में – शायद दुनिया में भी – ये अकेला ऐसा कुनबा है, जो अपने पड़ोसी देशों के बारे में अमरीकी आयोगों और एजेंसियों के इस तरह के एलानों को ईश्वरीय वचन मानकर फुदकते रहता है। इसलिए भी कि हाल के दौर में तो इन्होने अपने आपको अमरीका के साथ कुछ इस कदर नत्थी कर लिया है कि कई बार तो खुद अमरीकी भी संशय में पड़ जाते हैं कि वे अपने देश के प्रति ज्यादा वफादार हैं या कोई साढ़े तेरह हजार किलोमीटर दूर धरती के दूसरे कोने पर बैठे संघी और भाजपाई उनसे भी ज्यादा हैं।

2014 में सत्ता में आने के बाद साफ़-साफ़ नजर आने वाला एक यही काम तो हुआ है। कभी भरे गले से बराक ओबामा को अपना जिगरी बताया और उससे तू-तड़ाक के संबंधों का बखान खुद गा-गाकर सबको सुनाया। ट्रम्प के साथ तो रही सही दूरियां भी इस कदर नजदीकियां बन गयीं कि इधर हाउडी ट्रम्प, हिंदी में बोले तो 'कैसा है रे ट्रम्पवा', तो उधर हाउडी मोदी के तमाशे होने लगे। लगाव इतना उन्मुक्त हुआ कि सारी कूटनीतिक भद्रता की भद्रा उतारते हुए 'अब की बार ट्रम्प सरकार' का नारा बनकर अगले के चुनाव प्रचार तक जा पहुंचा। हालांकि अगले को इससे कोई ख़ास फ़ायदा नहीं हुआ – उस चुनाव में उसकी लुटिया डूब ही गयी। चार साल बाईडेन को रिझाते मनाते गुजरे, मगर ट्रम्प के दोबारा राष्ट्रपति बनने के बाद तो जैसे सारे तटबंध ही टूट गए।

उसके बाद जो-जो और जैसा-जैसा हुआ है और उससे भारत जैसे देश की जितनी भद्दपिटी है, उसकी इतिहास में कोई दूसरी मिसाल नहीं है। ओबामा को बराक बराक उवाचने वाले प्रधानमंत्री मोदी ने ट्रम्प को तुरंतई 'माय डिअर फ्रेंड डोलांड' कहकर ऊंची आसंदी पर विराज दिया और उसका जो सिला उनके दोस्त ने दिया, उसे देखकर 'हुए तुम दोस्त जिनके दुश्मन उसका आसमाँ क्यों हो' मिसरा याद आ गया।

'माय डिअर फ्रेंड' ने पहला झटका तो शपथ ग्रहण समारोह में न बुलाकर दिया। उसके बाद बड़ी मानमनुहार और जुगाड़ करने के बाद जब मुलाक़ात के लिए पहुंचे, तो प्रेस कांफ्रेंस में लाइव कैमरों के सामने ही हड़काकर तत्काल नीतियाँ बदलने का हुकुम सुना दिया। मगर मजाल है कि इस पर मुंह से कोई बोल तक फूटा हो! मुलाक़ात करके वापस लौट आने के बाद भी किसी तरह की अप्रसन्नता या असहमति नहीं जताई गयी। मोदी संघ के प्रचारक, भाजपा के नेता या निजी हैसियत से नहीं गए थे। वे अमरीका के राष्ट्रपति के सामने 140 करोड़ नागरिकों के प्रधानमंत्री के नाते बैठे थे, जबकि ऐसे ही बर्ताव पर अमरीकी रहमोकरम पर जिंदा यूक्रेन के ज़ेलिंसकी तक ने ट्रम्प को खरी खरी सुना दी थीं, मगर जैसा कि खुद ट्रम्प ने बार बार कहा है, मोदी उन्हें खुश करने के जरिये ढूंढ रहे थे, सो नाराज कैसे करते। इसके बाद तो दुनिया के इस सबसे घिनौने राष्ट्रपति ने जैसे भारत को पंचिंग बैग ही बना लिया और अपमानों की अंतहीन झड़ी ही लगा दी और वह आज भी जारी है।

पहलगाम के बाद बजाय भारत का साथ देने के धमकी देकर युद्ध रुकवाने के दावे को तो उसने जैसे तकिया कलाम ही बना लिया। गिनने वाले बताते हैं कि बन्दा अब तक कोई एक सौ बार कह चुका है कि उसने फोन करके धमकाया और युद्ध रुक गया। असली संख्या इससे अधिक ही होगी। इतना ही नहीं, अपनी इस 'उपलब्धि' की बिना पर भाई ने खुद को नोबल देने की मांग भी खुद ही कर डाली। मजाल है जो हस्तिनापुर में बैठे मोदी या उनके किसी अदने अफसर ने मिमियाकर भी इसका खंडन किया हो। जले पर नमक छिडकने के लिए इसी माय डिअर फ्रेंड ने पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान को दावतें देना शुरू कर दी : उसके सेनाध्यक्ष को अपने एक प्रमुख राष्ट्रीय दिन के समारोह का मेहमाने खुसूसी बनाया, एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था का सर्वेसर्वा बना दिया। इस तरह एक बार फिर जान-बूझकर अंगूठा भी दिखाया, मुंह भी चिढ़ाया। मगर इधर से 'छोड़ेंगे सब मगर तेरा साथ ना छोड़ेंगे' का दोस्ती राग बजता रहा।

उसके बाद टैरिफ ब्लैकमैलिंग आयी, सरकार ब्लैकमेल हुई। व्यापार समझौता हुआ। बाद में ट्रम्प ने उसका एलान पहले ही कर दिया, जबकि पड़ोसी बांग्लादेश उससे कहीं बेहतर डील लेने में कामयाब हुआ।

रूस से तेल न खरीदने सहित और कितनी शर्तें किस तरह मानी हैं, यह अब सब जानते हैं।

एक समय जो भारत दुनिया के 118 गुटनिरपेक्ष देशों का सर्वमान्य नेता था, उसे इतना ज्यादा अमरीका अनुमति आश्रित बना दिया कि वह अपने हजारों वर्ष पुराने दोस्त देश के सर्वोच्च नेता की हत्या पर शोक भी नहीं जता पाया।

इतना ज्यादा झुकने के बाद भी अच्छा अभिनेता होने के कटाक्ष के सिवा कुछ नहीं मिला। यह मजाक उड़ाने वाली टिप्पणी सिर्फ जुबान फिसल जाने का मामला नहीं था : पहले ट्रम्प की सहयोगी और वित्त सलाहकार स्कॉट बेसेंट का कहना और उसके बाद अमरीकी राष्ट्रपति भवन की प्रवक्ता और प्रेस सेक्रेटरी कैरोलिन लेविट द्वारा इसका दोहराया जाना साबित करता है कि यह एक सम्प्रभु देश को निशाना बनाकर, उसके योजनाबद्ध मानमर्दन के सिलसिले का हिस्सा है।

ये कुछ उदाहरण इसलिए गिनाये गए हैं, ताकि समझा जा सके कि इधर से झुकने में कोई कसर न छोड़ने के बाद भी उधर से हैसियत दिखाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी जा रही है। जबकि उधर वाले जानते हैं कि ये बंदे जन्म-जन्म से वफादारी निबाहते रहे हैं। जब अमरीका नहीं था, तब इनके लिए अंग्रेज थे – भाई लोगों के लिए वे भी इतने ही दिल फरेब थे। अंग्रेज चले गए, मगर आदत नहीं छूटी। ट्रम्प की दोनों जीतों के लिए यज्ञ किये, हवन किये, पाठ किये, अनुष्ठान किये। ट्रम्प तो ट्रम्प, उसके जुड़वां बेंजामिन नेतन्याहू तक के लिए यही सब बार-बार किये। इतना सब कुछ करने के बाद भी 'हे ब्रूटस तुम भी' का दोहराया जाना बहुत बेइंसाफी है।

वह भी तब, जब आका के देश में अपनी अच्छे बच्चे की छवि बनाने और उनसे मेल-मुलाकात बढ़ाने के लिए आरएसएस ने 3 लाख 30 हजार डॉलर – आज की कीमत के हिसाब से कोई 3 करोड़ रूपये खर्च किये। अमेरिकी लॉबिंग फर्म स्क्वायर पैटन बोग्स (एसपीबी) और एक अन्य लॉबिंग फर्म, स्टेट स्ट्रीट स्ट्रैटेजीज (एसएसएस), जो वन+ स्ट्रैटेजीज के नाम से कारोबार करती है, को तीन किश्तों में फीस देकर काम पर लगाया। हासिल क्या हुआ? प्रतिबन्ध की सिफारिश और सम्पत्ति जब्त करने की सलाह!! और जैसी कि इन दिनों चुप्प रहने की परम्परा बन गयी है, इस बार भी उसी का निर्वाह किया।

धार्मिक स्वतन्त्रता पर अंतर्राष्ट्रीय आयोग की इस रिपोर्ट पर – इन पंक्तियों के लिखे जाने तक – न तो प्रधानमंत्री बोले, न किसी मंत्री ने मुंह खोला। और तो और, समालखा में अपनी सौंवी सालगिरह का जश्न मना रहे आरएसएस ने भी नहीं बोला है। एक अदने से अधिकारी भर ने बयान दिया है, वह भी इतना लिजलिजा है कि न लीपने का है न पोतने का। तू कौन, मैं खामखाँ कहकर अमेरिका को उसकी सीमा में रहने की हिदायत देने के बजाय अधिकारी ने अमेरिका में मंदिरों पर होने वाले हमलों, भारतीय समुदाय के लोगों पर हिंसा का हवाला दिया है। प्रतिक्रिया का यह तरीका एक तरह से अमरीकी आयोग के कहे को स्वीकार कर लेने जैसा है कि हम करते हैं तो क्या हुआ, आपके देश में भी तो ऐसा होता है। इस अधिकारी के जवाब में सिर्फ मंदिरों भर का उल्लेख भी तोहमत का कबूलनामा ही है।

असली दुविधा उन भा भा भाओं – भारत से भागे भारतवासियों – की है, जो मोदी की सभाओं में अबकी बार ट्रम्प सरकार के जैकारे लगा-लगाकर गला बिठाए हुए थे, जो दुनिया भर में आरएसएस की शाखाएं खोले हुए हैं और भर भर झोली डॉलर और पोंड्स, येन और मार्क इकट्ठा करके नागपुर भेजते रहते हैं। संघ की इस वैश्विक भुजा के संयोजक इसी अमरीका में रहने वाले सौमित्र गोखले हैं, ये श्रीमान भी अभी तक कुछ नहीं बोले हैं। इस सहित दुनिया भर में और जितनी भी शाखाएं हैं, उनके संयोजकों सहित सब के सब आरएसएस के प्रचारक हैं।

हालांकि अमरीका में छवि बनाने और अमरीका के बड़े अधिकारियों तथा मंत्रियों आदि से भेंट मुलाक़ात करवाने के लिए तीन करोड़ रूपये दिए जाने के खुलासे के बाद संघ के आरएसएस के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील अंबेकर द्वारा यह सफाई दी गयी थी कि आरएसएस "केवल भारत में" काम करता है। उनका यह दावा रंगे हाथों पकड़े जाने पर मुकर जाने की संघ की स्थायी अदा के सिवा कुछ नहीं था। अम्बेकर की इस सफाई के कुल जमा छः सप्ताह बाद ही हैदराबाद में संघ की वैश्विक भुजा, जिसे आरएसएस के प्रचारक संघ का विश्व विभाग बताते हैं, का शिविर हुआ, जिसमें दुनिया भर के 79 देशों के 1,600 लोग शामिल हुए। स्वयं सरसंघचालक मोहन भागवत इसमें हिस्सा लेने पहुंचे थे।

भगवंत सिंह मान सरकार 'बेअदबी' के मामलों पर कोई नरमी नहीं बरतेगी; 'आप' सरकार 13 अप्रैल को विधानसभा के विशेष सत्र में सख्त सज़ाओं के लिए बेअदबी विरोधी कानून में संशोधन करेगी

भगवंत मान सरकार बैसाखी के दिन 'जगत जोत श्री गुरु ग्रंथ साहिब सत्कार एक्ट' में संशोधन के लिए पंजाब विधानसभा का विशेष सत्र बुलाएगी

– सरकार द्वारा 'बेअदबी' विरोधी ऐतिहासिक कानून लाने के लिए संत समाज से सलाह-मश्वरा जारी; सख्त कानून के तहत किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा: मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान

– सख्त कानून लोगों के विश्वास की रक्षा करेगा और इसमें डिजिटल अपराध, संपत्ति जब्ती और कड़ी सज़ा भी शामिल होगी; मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने संकल्प लिया कि 'बेअदबी' के किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा

अमृतसर, 21 मार्च (साहिल बेरी)

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने आज घोषणा की कि पंजाब सरकार 'जगत जोत श्री गुरु ग्रंथ साहिब सत्कार एक्ट-2008' में संशोधन करने और सख्त कानून लाने के लिए 13 अप्रैल को विधानसभा का विशेष सत्र बुलाएगी। प्रस्तावित कानून में कड़ी सज़ा, भारी जुर्माना, संपत्ति जब्ती और डिजिटल माध्यम से किए गए अपराधों को भी शामिल किया जाएगा। इस कानून का मसौदा संत समाज और कानूनी विशेषज्ञों से सलाह लेकर तैयार किया जा रहा है। सरकार ने स्पष्ट किया कि 'बेअदबी' के किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा।

संत समाज और धार्मिक नेताओं के साथ बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा, "खालसा साजना दिवस के पवित्र अवसर पर यह सत्र बुलाया जाएगा और संत समाज व कानूनी विशेषज्ञों से विचार-विमर्श कर एक्ट बनाया जायेगा। इस घिनौने अपराध के दोषियों को उदाहरणीय सज़ा सुनिश्चित करने के लिए देशभर के प्रमुख वकीलों से भी राय ली जाएगी।"

मुख्यमंत्री ने कहा कि सत्र के दौरान पंजाब सरकार द्वारा लागू किए गए 'जगत जोत श्री गुरु ग्रंथ साहिब सत्कार एक्ट-2008' में आवश्यक संशोधन किए जाएंगे ताकि श्री गुरु ग्रंथ साहिब और अन्य धार्मिक ग्रंथों की 'बेअदबी' रोकने के लिए एक

मजबूत और व्यापक कानून बनाया जा सके।

संत समाज, विभिन्न संप्रदायों, टकसालों, निहंग सिंह समूहों, उदासी संप्रदायों, निर्मला संप्रदायों, कार सेवा जत्थों, रागियों और कथावाचकों को आमंत्रित करते हुए मुख्यमंत्री ने उन्हें विशेष सत्र में शामिल होने की अपील की। उन्होंने कहा कि स्पीकर कुलतार सिंह संधवां और विधायक डॉ. इंदरबीर सिंह निज्जर जल्द ही समाना का दौरा करेंगे ताकि गुरजीत सिंह खालसा को अपना विरोध समाप्त करने और विशेष सत्र में शामिल होने के लिए निमंत्रण दिया जा सके। पंजाब सरकार संत समाज और श्रद्धालुओं की भावनाओं का सम्मान करती है और सख्त कानून लाने के लिए प्रतिबद्ध है, जो किसी भी शरारती तत्व को 'बेअदबी' करने से रोकेगा।"

पंजाब के मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि कानून में सख्त सजाएं, भारी जुर्माने और यहाँ तक कि दोषियों की संपत्ति जब्त करने का प्रावधान भी शामिल होगा। नया एक्ट डिजिटल सामग्री के माध्यम से की जाने वाली 'बेअदबी' के खिलाफ भी कार्रवाई का प्रावधान करेगा। धार्मिक ग्रंथों की 'बेअदबी' की घटनाओं को रोकने के लिए पंजाब सरकार पूरी ईमानदारी से काम कर रही है।" मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने संत समाज को भरोसा दिलाया कि सरकार सभी की धार्मिक भावनाओं का सम्मान करती है और 'बेअदबी' के दोषी को बख्शा नहीं जाएगा।

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने 'एक्स' पर लिखा, ₹आज, श्री अमृतसर साहिब स्थित सर्किट हाउस में संत समाज के साथ महत्वपूर्ण बैठक हुई, जहाँ पवित्र ग्रंथों की बेअदबी को रोकने के लिए 'जगत ज्योति श्री गुरु ग्रंथ साहिब सम्मान अधिनियम-2008' में संशोधन पर विचार-विमर्श किया गया। इस संबंध में 13 अप्रैल, 2026 को विधान सभा का विशेष सत्र बुलाया जाएगा। हम पवित्र श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को शब्द गुरु मानते हैं, जिनसे हमें सच, सेवा और मानवता की शिक्षाएँ मिलती हैं। यदि कोई बेअदबी के माध्यम से हमारे विश्वास को ठेस पहुँचाने की कोशिश करता है, तो उसे कभी भी माफ नहीं किया जाएगा। दोषियों को कड़ी एवं अनुकरणीय सजा दी जाएगी और पंजाब की आस्था और सम्मान की रक्षा के लिए सख्त कानून बनाए जाएंगे।₹

इससे पहले संत समाज और विभिन्न धार्मिक समूहों के सदस्यों ने मांग की कि दोषियों को कड़ी सजा सुनिश्चित करने के लिए लंबित मामलों की प्रक्रिया में तेजी लाई जाए। उन्होंने श्री गुरु तेग बहादुर जी की 350वीं शहीदी वर्षगांठ की याद में आयोजन करवाने के लिए 'आप' के नेतृत्व वाली पंजाब सरकार का धन्यवाद भी किया। उन्होंने श्री अमृतसर साहिब, श्री आनंदपुर साहिब और तलवंडी साबो को पवित्र शहर का दर्जा देने के सरकार के फैसले की सराहना की। बैठक सामूहिक अरदास के साथ संपन्न हुई।

इंडियन एन्क्लेव में पेयजल सप्लाई प्रोजेक्ट का उद्घाटन, विधायक डॉ. जसबीर संधू ने किया शुभारंभ

अमृतसर, 21 मार्च (साहिल बेरी)

अमृतसर पश्चिम विधानसभा क्षेत्र से आम आदमी पार्टी के विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू ने वार्ड नंबर 79 के अंतर्गत इंडियन एन्क्लेव में पीने वाले पानी की पाइपलाइन बिछाने के कार्य का शुभारंभ किया। यह कार्य आप नेता व पार्षद पति धर्मजीत बॉबी की अगुवाई में शुरू किया गया।

इस अवसर पर विधायक डॉ. संधू ने कहा कि इंडियन एन्क्लेव के निवासी लंबे समय से पेयजल सुविधा से वंचित थे और उन्हें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। उन्होंने कहा कि पिछली सरकारों ने इस बुनियादी समस्या की ओर ध्यान नहीं दिया, लेकिन "आप" सरकार ने सत्ता में आते ही लोगों की मूलभूत जरूरतों को प्राथमिकता दी है।

उन्होंने बताया कि इलाके में पाइपलाइन बिछाने का कार्य पूरा हो चुका है और जल्द ही इसे ट्यूबवेल से जोड़कर सरकारी पानी की सप्लाई शुरू कर दी जाएगी। उन्होंने इसे एक ऐतिहासिक कदम बताते हुए कहा कि इससे इलाके की पुरानी मांग पूरी होगी।

इस दौरान आप नेता धर्मजीत बॉबी, मैडम पूजा और स्थानीय निवासियों ने बच्चों के लिए

पार्क तथा बुजुर्गों के लिए सैर की सुविधा सहित अन्य मांगों को लेकर एक ज्ञापन भी सौंपा।

विधायक ने भरोसा दिलाया कि "आप" सरकार का मुख्य उद्देश्य हर घर तक बुनियादी सुविधाएं पहुंचाना है और इलाके की अन्य मांगों को भी जल्द पूरा किया जाएगा।

इस मौके पर दविंदर सिंह संधू, प्रधान हरजीत सिंह, परमजीत सिंह कलेर, मनबीर सिंह मान, प्रभजीत सिंह भिंडर, राजन कालिया, हरजिंदर सिंह बाठ, सत्ता भिंडर, बीर सिंह और पी.ए. माधव शर्मा सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

भगत सिंह भूले नहीं

भगत सिंह, सुखदेव क्यों, खो बैठे पहचान।
पूछ रही माँ भारती, तुम से हिंदुस्तान।।

भगत सिंह, आज़ाद ने, फूंका था शंख नाद।
आज़ादी जिनसे मिले, रखो हमेशा याद।।

बोलो सौरभ क्यों नहीं, हो भारत लाचार।
भगत सिंह कोई नहीं, बनने को तैयार।।

भगत सिंह, आज़ाद से, हो जन्मे जब वीर।
रक्षा करते देश की, डिगे न उनका धीर।।

मरते दम तक हम करे, एक यही फरियाद।
भगत सिंह भूले नहीं, याद रहे आज़ाद।।

मिट गया जो देश पर, करी जवानी वार।
देशभक्त उस भगत को, नमन करे संसार।।

भारत माता के हुआ, मन में आज मलाल।
पैदा क्यों होते नहीं, भगत सिंह से लाल।।

तड़प उठे धरती, गगन, रोए सारे देव।
जब फांसी पर थे चढ़े, भगत सिंह, सुखदेव।।

भगत सिंह, आज़ाद हो, या हो वीर अनाम।
करें समर्पित हम उन्हे, सौरभ प्रथम प्रणाम।।

–डॉ सत्यवान सौरभ

शुरू से लेकर अबतक योगी शासन की मंशा पर एडीजी आलोक सिंह की अगुवाई में खरा कानपुर जोन

सुनील बाजपेई

कानपुर। योगी सरकार की मंशा के यहां कानपुर जोन पुलिस उस हर मुद्दे पर सफल है ,जिसका संबंध कानून, शांति व्यवस्था तथा जनहित से है। कठोर परिश्रम निष्पक्ष और पारदर्शी कार्यशैली से सफलता हासिल करने के यह सभी बिंदु हर क्षेत्र में पैनी नजर के साथ ही अपराध/कानून-व्यवस्था, हत्या शीर्षक अन्तर्गत अनावरण हेतु शेष अभियोग, जब्तीकरण की कार्यवाही, अवैध खनन एवं परिवहन, साइबर क्राइम, महिला सुरक्षा, यू0पी0-112 में प्राप्त शिकायतों पर कृत कार्यवाही ,वाहन/संदिग्ध व्यक्तियों की चेकिंग तथा निरंतर पैदल गस्त अभियान से संबंधित हैं

मतलब मामला चाहे घटनाओं के सटीक खुलासे और अपराधियों की गिरफ्तारी का हो या फिर जन समस्याओं के निस्तारण से संबंधित आईजीआरएस का। यहां की चुनौती पूर्ण कानपुर जोन के अंतर्गत आने वाले आठ जिले कानपुर देहात, इटावा, औरैया, कन्नौज, फतेहगढ़ ,जालौन ,ललितपुर और झांसी अपराधियों के खिलाफ कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में हर दृष्टिकोण से अव्वल भी चल रही है। याद रहे कि आजकल एडीजी के रूप में कानपुर जोन की कमान योगी सरकार की मंशा के अनुरूप अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई और पीड़ितों की सहायता में भी सदैव अव्वल राष्ट्रपति तक के गोल्ड और प्लेटिनम समेत सभी तरह के मेडलों और पुरस्कारों के रुप में अनेक दुर्लभ उपलब्धियों के प्रसंसनीय धारक नोएडा के पहले सफल और सर्वोत्तम पुलिस कमिश्नर भी रहे भारत के कर्तव्यनिष्ठ और इमानदार आईपीएस अधिकारियों में से एक वरिष्ठ आई पी एस आलोक सिंह के हाथ में है।

सराहनीय और अनुकरणीय कार्यशैली वाले व्यवहार कुशलता के भी धनी, शिवत्व स्वभाव वाले सुप्रसिद्ध वरिष्ठ आईपीएस एडीजी आलोक सिंह का नौकरी की शुरुआत से लेकर विशुद्ध ईमानदारी से पूर्ण अबतक का जुझारू इतिहास यह साबित करता है कि उनकी कर्तव्य के प्रति प्रगाढ़

निष्ठा ने कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में आज तक वही किया जो देश और समाज के हित में रहा।

इस बारे में खास बात यह भी कि कर्तव्य के प्रति प्रगाढ़ निष्ठा वाले तेज तर्रार और व्यवहार कुशल एडीजी आलोक सिंह के पास आने वाला कोई भी पीड़ित आजतक निराश नहीं लौटा। प्रभावी कार्रवाई के रूप में उसकी समस्या का निदान होकर ही रहा है।

कुल मिलाकर अपनी नेतृत्व कुशलता के फलस्वरूप यूपी शासन द्वारा संचालित जनसुनवाई समन्वय शिकायत निवारण प्रणाली (आई जी आर एस) में भी कानपुर जोन को लगातार अव्वल रखने वाले ,भगवान और भाग्य यानी कर्म भरोसे रहने वाले जुझारू एडीजी आलोक सिंह की नेतृत्व कुशलता योगी सरकार की मंशा के अनुरूप जनहित में हर दृष्टिकोण से सफल है।

इस बारे में आध्यात्मिक दृष्टिकोण जिस आशय के सत्य को उद्घाटित करता है उसके मुताबिक इस संसार में लोगों की सहायता करने के लिए परमेश्वर शंख, चक्र और गदा लेकर नहीं आता है। वह किसी ना किसी महामानव को ही अपना माध्यम बनता है। इसी लिए इस कथन का आईपीएस आलोक सिंह जैसे कर्मयोगियों से भी नाता है। मतलब जनहित में विशुद्ध ईमानदारी का नाम आलोक सिंह है। दबाव में नहीं झुकने वाली निडरता का नाम भी आलोक सिंह है। पीड़ितों की हर संभव सहायता का नाम आलोक सिंह है। अपराधियों के उनके कर्मों का फल देने की कर्तव्य निष्ठा का नाम आलोक सिंह है। वही आलोक जो प्रकाश का भी पर्याय है और वही प्रकाश जिसके दायरे में आने वाला कोई अपराधी बच नहीं पाता है, क्योंकि परमेश्वर देश, कालखंड और परिस्थितियों के अनुरूप योगी ,मोदी ही नहीं बल्कि आईपीएस आलोक सिंह भी बन जाता है। कुल मिलाकर कानपुर जोन की कानून और शांत व्यवस्था के पक्ष में जनहितकारी उपलब्धियां योगी सरकार का झंडा बुलंद करने में अग्रणी है। इस बीच उनके निर्देशन में चैत्र नवरात्रि एवं ईद-उल-फितर पर्व को सकुशल, शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न कराने हेतु जोन के समस्त जनपदों में सुदृढ़ एवं बहुस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की गयी है।

झारखंड की राजधानी रांची समेत राज्य के विभिन्न भागों में मना सरहुल पर्व

आम आदिवासियों साथ कहीं मुख्यमंत्री हेमंत तो कहीं चंपाई राजधानी में नजर आये

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, पूरे राज्य में आज आदिवासी समाज का प्रमुख प्रकृति पर्व सरहुल पारंपरिक धूमधाम से मना। इस मौके पर राजधानी की सड़कों पर सरना मानने वाले आदिवासी धर्मावलंबियों ने भव्य शोभायात्रा निकाली, जिसमें ढोल-नगाड़ों की थाप पर लोग नाचते-गाते नजर आए वहीं कहीं मुख्यमंत्री हेमंत तो कहीं पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई अपने पारंपरिक शैली में लोगों के साथ नजर आये।

मख्यमंत्री हेमन्त सोरेन एवं उनकी धर्मपत्नी विधायक श्रीमती कल्पना सोरेन आज सिरम टोली रांची स्थित सरना स्थल पहुंचे। मुख्यमंत्री ने यहां प्रकृति पर्व सरहुल के अवसर पर हर्षोल्लास एवं श्रद्धा के साथ पारंपरिक विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। सरहुल की पारम्परिक रीति-रिवाज के तहत पूजन कार्य पाहन ने संपन्न कराया तथा मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के कान में सरई (साल) का फूल खोंसा। यह परंपरा प्रकृति एवं मानव के गहरे संबंध का प्रतीक मानी जाती है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने राज्य वासियों को प्रकृति, संस्कृति एवं समरसता के प्रतीक पावन पर्व सरहुल की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने अपने संबोधन में कहा कि सिरमटोली के इस ऐतिहासिक स्थल पर आप सभी का हार्दिक स्वागत और अभिनंदन करते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रकृति पर्व सरहुल महोत्सव से जुड़े सभी लोगों का मैं दिल से शुक्रिया अदा करता हूं तथा धन्यवाद देता हूं कि आज के शुभ अवसर पर आप लोगों ने इस समृद्ध परंपरा एवं रीति-रिवाज की डोर को आगे ले जाने का काम कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि सरहुल महोत्सव हमारी समृद्ध आदिवासी संस्कृति, प्रकृति के प्रति सम्मान और सामुदायिक एकता का जीवंत प्रतीक है। यह पर्व हमें पर्यावरण संरक्षण और आपसी सौहार्द का संदेश देता है। राज्य सरकार आदिवासी परंपराओं, संस्कृति और विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने प्रकृति, संस्कृति और सामाजिक समरसता के प्रतीक इस पावन पर्व पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

रांची में शोभायात्रा शहर के विभिन्न इलाकों से गुजरते हुए सिरमटोली स्थित मुख्य सरना स्थल की ओर बढ़ा। जुलूस में शामिल लोग पारंपरिक वेशभूषा में सजे हुए हैं और सामूहिक गीत-नृत्य के जरिए अपनी संस्कृति की झलक पेश कर रहे। रास्ते में जगह-जगह लगाए गए स्टॉल पर लोगों के लिए शर्बत, चना और बुंदिया का वितरण भी किया जा गया , जो इस उत्सव को और खास बना बनाया।

जुलूस

सरहुल आदिवासी समाज का एक प्रमुख त्योहार है, जिसे खासतौर पर झारखंड, छत्तीसगढ़ और ओडिशा में मनाया जाता है। यह पर्व प्रकृति, धरती माता और जंगलों के प्रति आभार व्यक्त करने का प्रतीक है। इस दिन साल वृक्ष के फूलों की पूजा की जाती है, जो नए जीवन और समृद्धि का संकेत माने जाते हैं।

जुलूस

सरहुल को आदिवासी समाज में नए साल की शुरुआत के रूप में देखा जाता है। जब पेड़ों पर नए फूल आते हैं। खेतों में हरियाली लौटती है। मौसम बदलता है। ऐसे समय में माना जाता है कि प्रकृति एक नए चक्र की शुरुआत कर रही है- यही उनका "नया साल" है।

सीएम हेमंत सोरेन

जुलूस

दुनिया के अलग-अलग धर्मों और समुदायों में नए साल को मनाने का समय अलग-अलग होता है। हिंदू धर्म में नया साल विक्रम संवत के रूप में मनाया जाता है, जो आमतौर पर मार्च-अप्रैल (चैत्र मास) में आता है।जो झारखंड के सरायकेला खरसावां सिंहभूम के ओड़िया समाज का नये साल का आगाज होता है।

वहीं अनय इस्लामिक न्यू इयर को मुहर्रम महीने की शुरुआत के साथ मनाता है। सिख धर्म में वैशाखी 13 या 14 अप्रैल को नए साल और फसल उत्सव के रूप में मनाई जाती है। वहीं ईसाई समुदाय को 1 जनवरी को नए साल के रूप में सेलिब्रेट करता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023